



Sarada to Devanagari transliteration



Chintamani Narayan

4158 UPSS Stava Chintamani Narayan
Bhatta Folio 1 13 Complete

(UPSS Lucknow)







Sarada to Devanagari transliteration

Date 5th June 2020

L01.01	
A01.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 ओं न मः शि वा य ओं सु गि रा चि त हा रि ण्या प श्य न्त्या
B01.01	ओं नमः शिवाय॥ ओं सुगिरा चित्तहारिण्या पश्यन्त्या
L01.02	
A01.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 दृ श्य मा न या॥ ज य त्यु ल्ला सि ता न न्द म हि मा प र मे श्व र
B01.02	दृश्यमानया॥(।)जयत्युल्लासितानन्दमहिमा रमेश्वर(परमेश्वरः॥१॥)
L01.03	
A01.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 यः स्फी त श्री द या म्बोध प र मा न न्द स म्प दा वि द्यो द्यो ति
B01.03	यः स्फीतश्रीदयाम्बोधपरमानन्दसम्पदा॥ (स्फीतः श्रीदयाबोधपरमानन्दसम्पदा।) विद्योद्योति-
L01.04	
A01.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 त मा हा त्म्य स ज य त्य प रा जि तः॥ २ प्र स र द्बि न्द ना दा य
B01.04	तमाहात्म्य(तमाहात्म्यः) स जयत्यपराजितः॥२॥ प्रसरद्बिन्दनादाय (प्रसरद्बिन्दुनादाय)

1. Lines 01.01-01.04 – Sentences are shown following the order of verses:

- ओं नमः शिवाय॥ ओं सुगिरा चित्तहारिण्या पश्यन्त्या दृश्यमानया।
- जयत्युल्लासितानन्दमहिमा परमेश्वरः॥१॥
- यः स्फीतः श्रीदयाबोधपरमानन्दसम्पदा।
- विद्योद्योतितमाहात्म्यः स जयत्यपराजितः॥२॥
- प्रसरद्बिन्दुनादाय (to be continued in Line 01.05)

Notes



Sarada to Devanagari transliteration

Date 5th June 2020 (continued...)

Notes

2. June 5, 2020 – Notes on Transliteration of Page 1 – Lines 1-4, As has been mentioned in Version 2, correct readings of scribal errors are shown within brackets. Version 3 is the transliteration with corrected words shown in brackets in Version 2.





Sarada to Devanagari transliteration

Date 6th June 2020

L01.05	
A01.05	1 2 3 4 5 6 7 8 ॥ 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 शुद्धामृतमयात्मने ॥ नमोनन्तप्रकाशाय शङ्करक्षीरसि
B01.05	[प्रसरद्बिन्दुनादाय] शुद्धामृतमयात्मने ॥ (I) नमोनन्तप्रकाशाय (नमोऽनन्तप्रकाशाय) शङ्करक्षीरसि-
L01.06	
A01.06	1 2 ॥ 3 ॥ 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 ॥ 20 न्धवे ॥ ३ ॥ द्विष्मस्त्वां त्वां तुमस्तुभ्यमन्त्रयामोम्बिकापतेऽ॥ अ
B01.06	[शङ्करक्षीरसि-]न्धवे ॥ ३ ॥ द्विष्मस्त्वां त्वां तुमस्तुभ्य(स्तुमस्तुभ्यं) मन्त्रयामोम्बिकापते(मन्त्रयामोऽम्बिकापते) ॥(I) अ-
L01.07	
A01.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 ॥ 16 ॥ 17 18 19 20 21 तिवाल्लभ्यतःसाधु विश्वङ्ने दृतवानसि ॥ ४ ॥ संहृतस्पर्श
B01.07	[अ-]तिवाल्लभ्यतःसाधु विश्वङ्ने दृतवानसि (धृतवानसि) ॥ ४ ॥ संहृतस्पर्श-
L01.08	
A01.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 ॥ 12 13 14 15 16 17 18 19 20 योगायसम्पूर्णा मृतसूतये ॥ वियन्मायास्वरूपायवि
B01.08	[संहृतस्पर्श-] योगायसम्पूर्णामृतसूतये ॥ (I) वियन्मायास्वरूपाय वि-



Sarada to Devanagari transliteration

Date 6th June 2020 (continued...)

Notes	<ol style="list-style-type: none">1. Line 01.05 – [प्रसरद्बिन्दुनादाय] indicates that Line 01.05 continues from प्रसरद्बिन्दुनादाय in Line 01.04 of June 5, 20202. Line 01.06 – (i) [शङ्करक्षीरसि-] indicates that न्धवे continues from शङ्करक्षीरसि in Line 01.05. (ii) त्वां - The anusvara of त्वां is smudged3. Line 01.08 – (i) [संहतस्पर्श-] indicates that योगाय continues from संहतस्पर्श in Line 01.07. (ii) Hyphen in वि- indicates that the word will continue in Line 02.01.4. Words within (...) indicate the correct formation of scribal errors.5. The correct formation of all the words in verse form is shown in Version 36. Version 3 – Transliteration of Sentences after Incorporating the Corrections – Lines 01.05-01.08<ol style="list-style-type: none">a. [प्रसरद्बिन्दुनादाय] शुद्धामृतमयात्मने।b. नमोऽनन्तप्रकाशाय शङ्करक्षीरसिन्धवे॥३॥c. द्विष्मस्त्वां त्वां स्तुमस्तुभ्यं मन्त्रयामोऽम्बिकापते।d. अतिवाल्मभ्यतः साधु विश्वङ्गो धृतवानसि॥४॥e. संहतस्पर्शयोगाय सम्पूर्णांमृतसूतये।f. वियन्मायास्वरूपाय वि-7. (to be continued in Line 01.09)
--------------	--



Sarada to Devanagari transliteration

Page 2 Slokas L02.01 to L02.08

कवेमभुवेनमः॥५॥ द्वित्रेषधिनचित्रंयष्टिचेषधु
 त्रमेवम॥नभमःभवभभष्टुंभंइयभमेसुभ॥६
 पूलवेवृचभहृतेपूलवेमदतेपुनः॥७॥ वृद्धभ्रमपि
 वेनुंयुयभुवेनमः॥८॥ वृद्धभ्रगठिनीष्टे
 भहृधिनःभवेगते॥९॥ यभमेसुभदंभभूमंकीदंभी
 भिवभुमः॥३॥ निरुपभनभभुभभठिदुवेवइव
 ते॥१०॥ लगष्टिइंनभभुभैकलज्ञायकुलिनै॥११॥
 भयल्लेपगइष्टुदुदुदुविभलीरुं॥१२॥ भिवभुं




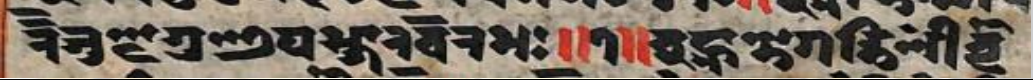
भु.
सि
०





Sarada to Devanagari transliteration

Date 7th June 2020

L02.01	
A02.01	1 2 3 4 5 6 7 ॥ 8 ॥ 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 भ वे श म्भ वे न मः ॥ ५ ॥ भि न्ने ष्व पि न भि न्नं य च्छि न्ने ष्व च्छि
B02.01	[वि-] भवे शम्भवे नमः॥५॥ भिन्नेष्वपि न भिन्नं यच्छिन्नेष्व च्छि-
L02.02	
A02.02	1 2 3 4 ॥ 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 न्न मे व च ॥ न मा मः स र्व सा मा न्यं कु मं त त्पा र मे श्व र म् ॥ ६
B02.02	[च्छि-]न्नमेव च ॥ (I) नमामः सर्वसामान्यं कुमं (रूपं) तत्पारमेश्वरम् ॥ ६ ॥
L02.03	
A02.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 18 19 20 21 प्र ण वो र्ध्वो र्ध मा त्रा तो प्य ण वे म ह ते पु नः ॥ ब्र ह्मा ण्डा द पि
B02.03	प्रणवोर्ध्वोर्धमात्रातोप्यणवे (प्रणवोर्ध्वोर्धमात्रातोऽप्यणवे) महते पुनः॥(I) ब्रह्माण्डादपि
L02.04	
A02.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 ॥ 12 ॥ 13 14 15 16 17 18 19 नै र्गु ण्य गु णा य स्था न वे न मः ॥ ७ ॥ ब्र ह्मा ण्ड ग भि णी ?यो
B02.04	नैर्गुण्यगुणाय स्थानवे (स्थाणवे) नमः ॥ ७ ॥ ब्रह्माण्डगर्भिणी ?यो(व्यो)-



Sarada to Devanagari transliteration

Date 7th June 2020 (continued...)



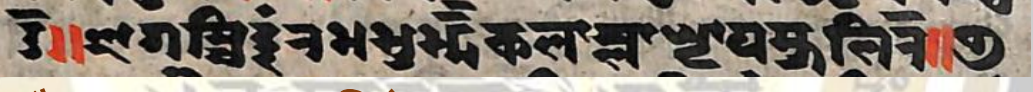

Notes

1. Line 02.01 - (i) [वि-] indicates that Line 02.01 continues from वि in Line 01.09 of June 6, 2020; (ii) Hyphen in च्छि- indicates that the word continues in Line 02.02
2. Line 02.04 - (i) The mark ? in ? यो indicates that the upper syllable in the conjunct letter व्यो is not legible. (ii) Hyphen in व्यो- indicates that the word will continue in Line 02.05.
3. Words within (...) indicate the correct formation of scribal errors.
4. The correct formation of all the words in verse form is shown in Version 3
5. Version 3 - Transliteration of Sentences after Incorporating the Corrections – Lines 02.01-02.04
 - a. [वि]भवे शम्भवे नमः॥५॥
 - b. भिन्नेष्वपि न भिन्नं यच्छिन्नेष्वच्छिन्नमेव च।
 - c. नमामः सर्वसामान्यं रूपं तत्पारमेश्वरम्॥६॥
 - d. प्रणवोर्ध्वोर्धमात्रातोऽप्यणवे महते पुनः।
 - e. ब्रह्माण्डादपि नैर्गुण्यगुणाय स्थाणवे नमः॥७॥
 - f. ब्रह्माण्डगर्भिणी व्यो-
 - g. (to be continued in Line 02.05)



Sarada to Devanagari transliteration

Date 8th June 2020

L02.05	
A02.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 ॥ 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 म व्य पि नः स व तो ग ते ॥ प र मे श्व र हं स म्य श क्तीं हं सी
B02.05	व्यो-]मव्यापिनः सर्वतोगते(सर्वतोगतेः)॥(I) परमेश्वरहंसस्य शक्तीं(शक्तिं) हंसी
L02.05	
A02.06	1 2 3 4 ॥ 5 ॥ 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 मि व स्तु मः ॥ ८ ॥ नि रु पा दा न स म्भार म भि ता वे व त न्व
B02.06	हंसी-]मिव स्तुमः॥८॥ निरुपादानसम्भारमभितावेव तन्व-
L02.06	
A02.07	1 ॥ 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 ॥ 18 ते ॥ ज ग च्चि त्रं न म स्त स्मै क ला श्ला घ्या य शू लि ने ॥ ९
B02.07	ते॥(I) जगच्चित्रं नमस्त  स्मै कलाश्लाघ्याय शूलिने॥९॥(९॥)
L02.08	
A02.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 18 19 20 मा या ज लो ध रा त्स म्य गु द्धृ त्य वि म ली कृ तं ॥ शि व ज्ञा नं
B02.08	मायाजलोधरात्सम्यगुद्धृत्य (मायाजलोदरात्)। विमलीकृतं (विमलीकृतम्)॥(I) शिवज्ञानं -



Sarada to Devanagari transliteration

Date 8th June 2020 (continued...)

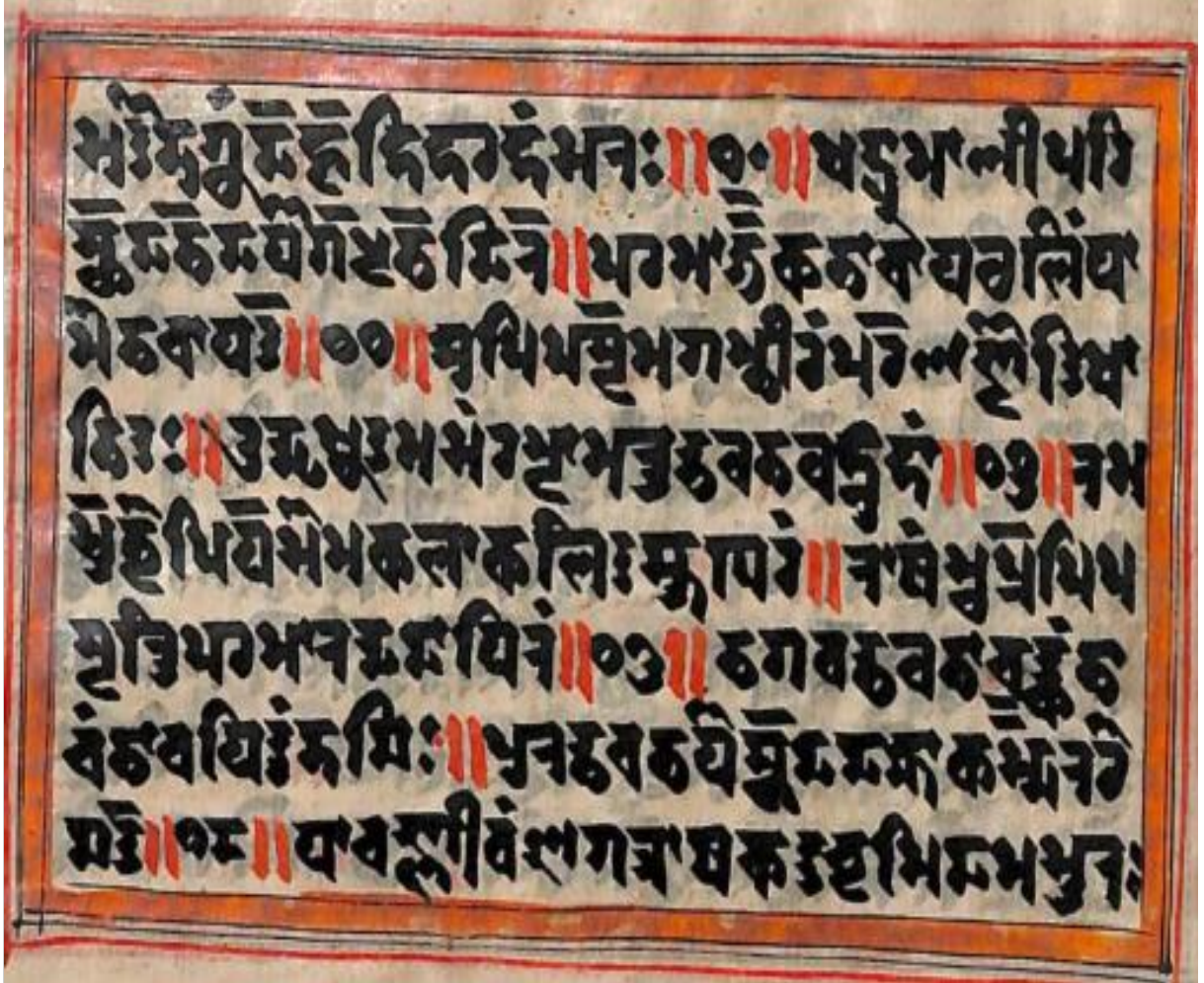
Notes

1. Line 02.05 – (i) [व्यो-] indicates that Line 02.05 continues from व्यो in Line 02.04 of June 7, 2020; (ii) Hyphen in हंसी- indicates that the word will continue in Line 02.06
2. Line 02.06 – Hyphen in तन्व- indicates that the word will continue in Line 02.07
3. Line 02.08 – Hyphen in शिवज्ञानं - indicates that the word will continue in Line 03.01.
4. Words within (...) indicate the correct formation of scribal errors.
5. The correct formation of all the words in verse form is shown in Version 3
6. Version 3 – Transliteration of Sentences after Incorporating the Corrections – Lines 02.05-02.08 (* Continuation of Verse 8 from Line 02.04 is shown within brackets)
 - a. *[ब्रह्माण्डगर्भिणी व्यो-] मव्यापिनः सर्वतोगतेः।
 - b. परमेश्वरहंसस्य शक्तिं हंसीमिव स्तुमः॥८॥
 - c. निरुपादानसम्भारमभित्तावेव तन्वते।
 - d. जगच्चित्रं नमस्तस्मै कलाशलाघ्याय शूलिने॥९॥
 - e. मायाजलोदरात्सम्यगुद्धृत्य विमलीकृतम्।
 - f. शिवज्ञानं
7. Towards the end of the page, scribe has indicated title & end of Folio No. on left side as स्त. चि. 1 (that is **स्तवचिन्तामणिः** 1). One front page & its back page (i.e. 2 pages, one on either side of one paper / palm-leaf / burjapatra, etc. are counted together as one folio)



Sarada to Devanagari transliteration

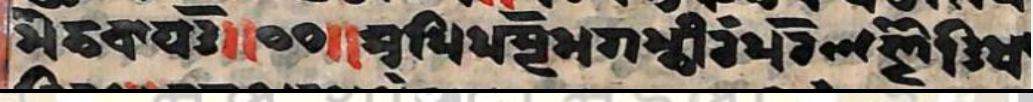
Page 3 Slokas L03.01 to L03.08





Sarada to Devanagari transliteration

Date 9th June 2020

L03.01	
A03.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 ॥ 13 ॥ 14 15 16 17 18 19 सु तो दु ग्धं दे ह्ये हि हर हं स नः ॥ १० ॥ ष ट्प्र मा णी प रि
B03.01	[शिवज्ञानं] सुतो[स्वतो] दुग्धं देह्येहि हरहंस नः॥१०॥ षट्प्रमाणीपरि-
L03.02	
A03.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 ॥ 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 च्छे द भे द यो गे प्य भे दि ने ॥ प र मा र्थ क भा वा य ब लिं या
B03.02	[षट्प्रमाणीपरि-] च्छेदभेदयोगेप्यभेदिने [भेदयोगेऽप्यभेदिने]॥(1) परमार्थकभावाय बलिं या-
L03.03	
A03.03	1 2 3 4 5 ॥ 6 7 ॥ 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 मो भ वा य ते ॥ १ १ ॥ अ पि प श्ये म ग म्भी रां प रे ण ज्यो ति षा
B03.03	[या-] मो भवाय ते ॥११॥ अपि पश्येम गम्भीरं [गम्भीरां] परेण ज्योतिषा-
L03.04	
A03.04	1 2 ॥ 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 ॥ 19 ॥ 20 21 भि तः ॥ उ न्मृ ष्ट त म सं र म्या म न्त र्भ व भ व द्? हा म् ॥ १२ ॥ न म
B03.04	[ज्योतिषा-] भितः॥(1) उन्मृष्टतमसं रम्यामन्तर्भव भवद्?हाम् [भवद्गुहाम्]॥१२॥ नम-



Sarada to Devanagari transliteration

Date 9th June 2020 (continued...)

	<p>1. An observation regarding the scribe's style of writing when च् is the top syllable in a conjunct letter as seen in [षट्प्रमाणीपरि-]च्छेद - in Line 03.02, यच्छिन्ने in Line 02.01 and जगच्चित्रं in Line 03.07: When in a conjunct letter, the scribe writes the top syllable च् like श् ।</p>
Notes	<p>2. Version 3 – Transliteration of Sentences shown after Incorporating the Corrections and following the order of verses</p> <ol style="list-style-type: none">[शिवज्ञानं] स्वतो दुग्धं देहयेहि हरहंस नः॥१०॥षट्प्रमाणीपरिच्छेदभेदयोगेऽप्यभेदिने।परमार्थकभावाय बलिं यामो भवाय ते॥११॥अपि पश्येम गम्भीरां परेण ज्योतिषाभितः।उन्मृष्टतमसं रम्यामन्तर्भव भवद्गुहाम्॥१२॥नम-



Sarada to Devanagari transliteration

Date 10th June 2020

L03.05	
A03.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 स्ते भ्यो पि ये सो म क ला क लि त श्थ ख रं ना थं स्व प्ने पि प
B03.05	नम-]स्तेभ्योपि(स्तेभ्योऽपि) ये सोमकलाकलितश्थखरं (सोमकलाकलितशेखरम)॥ (।) नाथं स्वप्नेपि (स्वप्नेऽपि) प-
L03.06	
A03.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 श्य न्ति प र मा न न्द दा यि नं १ ३ भ ग व न्भ व भा व त्कं भा
B03.06	नम-]स्तेभ्योपि(स्तेभ्योऽपि) ये सोमकलाकलितश्थखरं (सोमकलाकलितशेखरम)॥ (।) नाथं स्वप्नेपि (स्वप्नेऽपि) प-
L03.07	
A03.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 वं भा व यि तुं रु चिः पु न र्भ व भ यो च्छे द द क्षा क स्मै न रो
B03.07	[भा]वं भावयितुं रुचिः। पुनर्भवभयोच्छेददक्षा कस्मै न रो-
L03.08	
A03.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 च ते १४ या व ज्जी वं ज ग न्ना थ क र्त व्य मि द म स्तु नः
B03.08	[रो]चते॥१४॥ यावज्जीवं जगन्नाथ कर्तव्यमिदमस्तु नः (नः।)



Sarada to Devanagari transliteration

Date 10th June 2020 (continued...)

	<p>1. Version 3 – Transliteration of Sentences after Incorporating the Corrections – Lines 03.05-03.08 (* Continuation of Verse 13 from Line 03.04 is shown within brackets)</p>
Notes	<p>a. *[नम-] स्तेभ्योऽपि ये सोमकलाकलितशेखरम्। b. नाथं स्वप्नेऽपि पश्यन्ति परमानन्ददायिनम् ॥१३॥ c. भगवन् भवभावत्कं भावं भावयितुं रुचिः। d. पुनर्भवभयोच्छेददक्षा कस्मै न रोचते ॥१४॥ e. यावज्जीवं जगन्नाथ कर्तव्यमिदमस्तु नः।</p> <p>2. An observation on transliteration of Line 03.08 - यावज्जीवं Line 03.08 - यावज्जीवं - Here, the top syllable ज is written with a clear horizontal शिरोरेखा। This is unlike the scribe's usual style of writing ज with two top curves to denote the two lines dropping from the शिरोरेखा - e.g. Lines 01.02 - जयत्युल्लासिता, 01.04 - जयत्यपराजितः, 02.07 - जगच्चित्रं, 02.08 - मायाजलोदरात्, 02.08 - शिवज्ञानं (ज्+जा = जा), 03.03 - ज्योतिषा, and 03.08 - जगन्नाथ।</p>



Sarada to Devanagari transliteration

Page 4 Slokas L04.01 to L04.08

हृद्भ्रमरुत्तरेकगुभनभुद्देवयभ्रिः॥०५॥साण
 भदभ्रुविभीलवेरुगभभयद्यते॥नभेवत्तुलेद्य
 रुकल्दककयसभ्रुवे॥०६॥वद्भ्रःकयकमभ्रिः
 नियेष्टुहयिपुठे॥हृद्भ्रयीदुयनिदुद्भ्रुःकभ्रिद्भ्रुभा
 धिकदिमिग॥०७॥एगंभनभदरुत्तुभिःनियु
 क्रिभ्र॥मनहृथेकभभ्रुसालिनेकलिनेवभः॥०८
 हृदीउगुलयेगभ्रुभाष्टेयभ्रुप्रलये॥नभधिए
 यंष्टैकिभ्रुलभ्रुःदले॥०९॥नभेवभःमि

न.
४.
३





Sarada to Devanagari transliteration

Date 11th June 2020 (continued...)

Notes

1. Transliteration of Sentences shown after Incorporating the Corrections and following the order of verses
 - a. त्वत्प्रसादात्त्वदेकाग्रमनस्कत्वेन या स्थितिः॥१५॥
 - b. शाखासहस्रविस्तीर्णवेदागमयात्मने।
 - c. नमोऽनन्तफलोत्पादकल्पवृक्षाय शम्भवे॥१६॥
 - d. वाङ्मनःकायकर्माणि विनियोज्य त्वयि प्रभो।
2. त्वन्मयिभूय निर्द्वन्द्वाः कच्चित्स्यामा-An observation on transliteration of Line 03.08 - यावज्जीवं Line 03.08 - यावज्जीवं - Here, the top syllable ज् is written with a clear horizontal शिरोरेखा। This is unlike the scribe's usual style of writing ज् with two top curves to denote the two lines dropping from the शिरोरेखा - e.g. Lines 01.02 - जयत्युल्लासिता, 01.04 - जयत्यपराजितः, 02.07 - जगच्चित्रं, 02.08 - मायाजलोदरात्, 02.08 - शिवज्ञानं (ज्+जा = जा), 03.03 - ज्योतिषा, and 03.08 - जगन्नाथ।
3. Versions 2 & 3: Hyphen after कच्चित्स्यामा indicates that the verse is to be continued in Line 04.05.
4. Version 2: Correct versions of scribal errors are shown within 'c' brackets.
5. Hyphenated words at the end of a line continue in next line. Their continuity is shown within square brackets in the concerned line which follows.



Sarada to Devanagari transliteration

Date 12th June 2020

L04.05	
A04.05	1 2 3 4 5 ॥ 6 7 ॥ 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 पि क हि चि त् ॥ १७ ॥ ज ग तां सर् ग सं हा र त त् त दि त नि यु
B04.05	[कच्चित्स्यामा]पि कर्हिचित्॥१७॥ जगतां सर्गसंहारतत्तदितनियु (सर्गसंहारतत्तद्धितनियु)-
L04.06	
A04.06	1 2 ॥ 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 ॥ 19 20 क्ति षु ॥ अ न न्या पे क्ष सा म र्क्य/शा लि ने श्थ/ लि ने न मः ॥ १ ८ थ्य शू
B04.06	...नियु]क्तिषु॥(I) अनन्यापेक्षसामर्क्यशालिने / अनन्यापेक्षसामर्थ्यशालिने (अनन्यापेक्षसामर्थ्यशालिने) श्थलिने / शूलिने (शूलिने) नमः॥१८॥(१८॥)
L04.07	
A04.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 18 19 20 व्य ती त गु ण यो ग स्य मु ख्य ध्ये य स्य धूर् ज टेः ॥ ना मा पि ध्या
B04.07	व्यतीतगुणयोगस्य मुख्यध्येयस्य धूर्जटेः॥(I)नामापि ध्या-
L04.08	
A04.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 ॥ 13 14 ॥ 15 16 17 18 19 य तां ध्या नै कि म न्या ल म्ड/नैः फ लं ॥ १ ९ ॥ न मो न मः शि म्भ
B04.08	[ध्या]यतां ध्यानै (ध्यानैः) किमन्यालम्डनैः/ किमन्यालम्भनैः (किमन्यालम्भनैः) फलं (फलम्)॥१९॥नमो नमः शि-

Bottom of Page – Left Margin – ना. भ. २



Sarada to Devanagari transliteration

Date 12th June 2020 (continued...)

	<p>1. Transliteration of Sentences after Incorporating the Corrections – Lines 04.05-04.08 (Continuation of Verse 17 from Line 04.04 is shown within square brackets. Hyphen after शि in last line indicates that the verse is to be continued in Line 05.01)</p> <p>a. [कच्चित्स्यामा]पि कर्हिचित्॥१७॥</p> <p>b. जगतां सर्गसंहारतत्तद्धितनियुक्तिषु।</p> <p>c. अनन्यापेक्षसामर्थ्यशालिने शूलिने नमः॥१८॥</p> <p>d. व्यतीतगुणयोगस्य मुख्यध्येयस्य धूर्जटेः।</p> <p>e. नामापि ध्यायतां ध्यानैः किमन्यालम्बनैः फलम्॥१९॥</p> <p>f. नमो नमः शि-</p> <p>g. ना. भ. २</p>
Notes	<p>2. Bottom of Page – Left Margin – ना. भ. २ = नारायण भट्टः २। Thereby, the scribe indicates the author's name नारायण भट्टः and the end of Folio 2, that is end of page 4. (Please refer to Notes on Folio in the context of Lines 2.04-2.08 on June 10, 2020) A meticulous scribe indicates the name of text, author, number at the end of a folio, etc. to avoid mix up of pages or folios of different manuscripts of the same text or different texts. These indications are similar to the headers and footers showing the name of the author, title of text, name or number of Chapter, etc.</p> <p>3. Ambiguous writing is observed in the following instances:</p> <p>a. Line 04.06 – Is it सामर्क्य or सामर्थ्य? Generally, in a conjunct letter where थ् is the bottom-most syllable, थ् is written with a special form (similar to the cursory writing of 'r' in English). It is written in the regular form when it is the upper syllable. Here, थ् is sandwiched between र् at the top and य as the bottom-most syllable. The scribe has opted to write the middle syllable, that is थ् with the special form. In doing so, he writes it like the special form of क। Therefore, the word सामर्थ्य looks like सामर्क्य</p> <p>b. Line 04.06 – Is it शथलिने or शूलिने? Generally, the ऊकार symbol (double in turned curves) under श is that the lower curve starts at the same point as the upper curve or attached to the upper curve nearer to the upper curve's starting point. Here, the scribe's style of writing of ऊकार symbol (double in turned curves) under श resembles the special form of lower थ (similar to the cursory writing of 'r' in English). This leads to the ambiguity on whether the word is शथलिने or शूलिने।</p> <p>c. Line 04.08 - Is it किमन्यालम्डनैः or किमन्यालम्भनैः? In ड, the curve stops short of the imaginary extension of the middle vertical line. In the curve goes further till the imaginary extension of the middle vertical line. Here, the curve stops short of the imaginary extension of the middle vertical line. Hence, it can be read as ड। It may be argued that the scribe intended to write भ but had to keep the curve short because of lack of space posed by the lower border line. In either case, both words</p>



Sarada to Devanagari transliteration

किमन्यालम्डनैः and किमन्यालम्भनैः are scribal errors. The correct syllable should be ब and the correct version of the word is किमन्यालम्बनैः।

Page 5 Slokas L05.01 to L05.08





Sarada to Devanagari transliteration

Date 13th June 2020 (continued...)

Notes	<p>1. Version 3 - Transliteration of Sentences shown after Incorporating the Corrections and following the order of verses (Continuation of Verse 20 from Line 04.08 is shown within square brackets. Hyphen after स्रो in last line indicates that the verse 22 is to be continued in Line 05.05):</p> <ol style="list-style-type: none">[नमो नमः शिवायेति मन्त्रसामर्थ्यमाश्रिताः।श्लाघ्यास्ते शाम्भवी भूतिमुपभोक्तुं य उदयताः॥२०॥कः पन्था येन न प्राप्यः का च वाङ्मोच्यसे यया।किं ध्यानं येन न ध्येयः किं वाकिं नासि यत्प्रभो॥२१॥अर्चितोऽयमयं ध्यात एष तोषित इत्ययम्।रसः स्रो- <p>2. While writing अनुस्वारः, the general rule and practice is to place the dot right above a given syllable (e.g. कं, कुं, कूं, etc.), or to the right of a given syllable (e.g. किं, कीं, कों, कौं, etc.). Here, we see that the scribe does not maintain consistency in placing the अनुस्वारः above a given syllable. At times, he /she places it correctly on the concerned syllable – e.g. क्तुं of भोक्तुं (Line 05.02), नं of ध्यानं (Line 05.03) and thrice in the case of किं (Line 05.03). At times, the अनुस्वारः is placed on the top left of the syllable – e.g. यं of अर्चितोऽयमयं (Line 05.04). This placing of अनुस्वारः on top left of the syllable has caused an error while writing शाम्भवी (Line 05.01). The अनुस्वारः has moved further left on to the previous letter. So, instead of the अनुस्वारः getting placed on the top left of वी, it has been wrongly placed on the previous letter ष्भ। This has caused the scribal error शाम्भवी in Line 05.01.</p>
--------------	---



Sarada to Devanagari transliteration

Date 14th June 2020

L05.05	
A05.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 तः स ह स्रे ण त्वयि मे भ व व र्धतां ॥ २२ ॥ नमो निः शेष धी
B05.05	[स्रो]तःसहस्रेण त्वयि मे भव वर्धतां(वर्धताम्)॥२२॥नमो निःशेषधी-
L05.06	
A05.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 प त्रि मा ला ल य म या त्म ने ॥ ना था य स्था ण वे तु भ्यं ना ग य
B05.06	[निःशेषधी] पत्रिमालालयमयात्मने॥(।) नाथाय स्थाणवे तुभ्यं नागय-
L05.07	
A05.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 ज्ञो प वी ति नी ॥ २ ३ ॥ अ ज्ञा न ति मि र स्यै क मौ ष धं स म्सृ
B05.07	[नागय]ज्ञोपवीतिनीं([नागय]ज्ञोपवीतिने॥२३॥अज्ञानतिमिरस्यैकमौषधं संसृ(संसृ)-
L05.08	
A05.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 ति स्त व ॥ भ व तत् त्प्र दा ने न प्र सा दः क्रि य तां म यि ॥ २ ४
B05.08	[संसृ]तिस्तव॥(।) भव तत्प्रदानेन प्रसादः क्रियतां मयि॥२४॥

Notes

- Version 3 – Transliteration of Sentences after Incorporating the Corrections – Lines 05.05-05.08 (Continuation of Verse 17 from Line 05.04 is shown within square brackets).
 - [रसः स्रो]तःसहस्रेण त्वयि मे भव वर्धताम्॥२२॥
 - नमो निःशेषधीपत्रिमालालयमयात्मने।
 - नाथाय स्थाणवे तुभ्यं नागयज्ञोपवीतिने॥२३॥
 - अज्ञानतिमिरस्यैकमौषधं संसृतिस्तव।
 - भव तत्प्रदानेन प्रसादः क्रियतां मयि॥२४॥



Sarada to Devanagari transliteration

2. Line 05.07 – Scribal error: सम्सु; Corrected version: संसु; By the sūtra 'मोऽनुस्वारः।' - ८.३.२३, मकारः, when followed by a consonant, changes to अनुस्वारः।





Page 6 Slokas L06.01 to L06.08





Sarada to Devanagari transliteration

Date 15th June 2020

L06.01	
A06.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 18 19 20 21 न मः शि वा य निः शेष पु रु षार्थ प्र सा ध कः ॥ प्र णन्तव्यः प्र
B06.01	नमः शिवाय निःशेषपुरुषार्थप्रसाधकः ॥(1) प्रणन्तव्यः प्र-
L06.02	
A06.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 ॥ 12 13 ॥ 14 15 16 17 18 19 20 21 णा मो पि य दी य इ ह धी म तां ॥ २ ५ ॥ म ग्नै र्भी मे भ वा म्भो धो
B06.02	[प्र]णामोपि ([प्र]णामोऽपि) यदीय इह धीमतां (धीमताम्) ॥२५॥ मग्नैर्भीमे भवाम्भोधो (भवाम्भोधौ)
L06.03	
A06.03	1 2 3 4 5 6 7 8 ॥ 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 नि ल ये दुः ख या द सां ॥ भ क्ति चि न्ता म णिं शा र्व त तः प्रा प्य
B06.03	निलये दुःखयादसां (दुःखयादसाम्) ॥(1) भक्तिचिन्तामणिं शार्व ततः प्राप्य
L06.04	
A06.04	1 2 3 4 ॥ 5 6 ॥ 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 न किं जि तं ॥ २ ६ ॥ नि रा व र ण नि र्दु न्द्व नि श्च ल ज्ञा न सं प।
B06.04	नकिं जितं (जितम्) ॥२६॥ निरावरणनिर्दुन्द्वनिश्चलज्ञानसंप। (निरावरणनिर्द्वन्द्वनिश्चलज्ञानसंप) -



Sarada to Devanagari transliteration

Date 15th June 2020 (continued...)

	<p>1. Version 3 – Transliteration of Sentences shown after Incorporating the Corrections and following the order of verses (Hyphen after स्रो in last line indicates that Verse 27 is to be continued in Line 06.05)</p> <p>a. नमः शिवाय* निःशेषपुरुषार्थप्रसाधकः। (*क्षेमेन्द्रस्य वृत्तिः - नम ईशाय)</p> <p>b. प्रणन्तव्यः प्रणामोऽपि यदीय इह धीमताम्॥२५॥</p> <p>c. मग्नैर्भोमे भवाम्भोधौ निलये दुःखयादसाम्।</p> <p>d. भक्तिचिन्तामणिं शार्व ततः प्राप्य न किं जितम्॥२६॥</p> <p>e. निरावरणनिर्द्वन्द्वनिश्चलज्ञानसंप-</p>
Notes	<p>2. Line 06.04 – (i) निर्द्वन्द्व - Scribe's style of writing व as the lowermost syllable in the conjunct letter द्व of निर्द्वन्द्व resembles ब। This could prompt one to transliterate the word as निर्द्वन्द्व। The same ambiguity in writing was seen in निर्द्वन्द्व in Line 4.04 (June 13, 2020). This is unlike the unambiguous writing of व as the lowermost syllable in the conjunct letter त्वां in Line 6.05 to follow. Line 06.04 – (ii) A single daṇḍa is seen in the manuscript at the end of Line 06.04 in निरावरणनिर्द्वन्द्वनिश्चलज्ञानसंप। A similar single daṇḍa was seen at end of Line 04.04 in कच्चित्स्यामा। The daṇḍa in both instances do not mark the end of a sentence or end of half-verse. Nor should the daṇḍa be treated as the Devanāgarī's आकार symbol since treating so will alter the metrical structure and meaning of the word. There should be no daṇḍa at the end of Line 04.04 or 06.04.</p>



Sarada to Devanagari transliteration

Date 16th June 2020

L06.05	
A06.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 दां ॥ जे यो सि किल केप्येते येत्वांजानन्ति धूर्जटे ॥ २७ ॥ नि
B06.05	दां (दाम्) ॥(।) जे यो सि (जेयोऽसि) किल केप्येते(केऽप्येते) ये त्वां जानन्ति धूर्जटे ॥२७॥नि
L06.06	
A06.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 गुणोपि गुणज्ञानं जेय एको जयत्यजः ॥ निष्कामोपि प्र
B06.06	[नि]गुणोपि([नि]गुणोऽपि) गुणज्ञानं(गुणज्ञानां) जेय एको जयत्यजः ॥(।) निष्कामोपि(निष्कामोऽपि) प्र-
L06.07	
A06.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 कृत्याय कामनां परं फलं ॥ २८ ॥ श्री रत्नामृतलाभाय ।
B06.07	[प्र]कृत्या य(यः) कामनां परं फलम् ॥२८॥ श्री रत्नामृतलाभाय।(रत्नामृतलाभाय)
L06.08	
A06.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 क्लिष्टं यत्र न कैः सुरैः ॥ तत्क्षीरोदधमैश्वर्यं तवैव सह
B06.08	क्लिष्टं यत्र न कैः सुरैः ॥(।) तत्क्षीरोदधमैश्वर्यं(तत्क्षीरोदधमैश्वर्यं) तवैव सह-



Sarada to Devanagari transliteration

Date 16th June 2020 (continued...)

Notes	<p>1. Version 3 – Transliteration of Sentences after Incorporating the Corrections – Lines 06.05-06.08 (Continuation of Verse 27 from Line 06.04 is shown within square brackets. Hyphen after सह in last line indicates that the verse 29 is to be continued in Line 05.01)</p> <p>a. [निरावरणनिर्द्वन्द्वनिश्चलज्ञानसंपादाम् । b. ज्ञेयोऽसि किल केऽप्येते ये त्वां जानन्ति धूर्जटे॥२७॥ c. निर्गुणोऽपि गुणज्ञानां ज्ञेय एको जयत्यजः। d. निष्कमोऽपि प्रकृत्या यः कामनानां परं फलम्॥२८॥ e. श्री रत्नामृतलाभाय क्लिष्टं यत्र न कैः सुरैः। f. तत्क्षीरोददमैश्वर्यं तवैव सह- g. Marginalia at bottom left of page: ना. भ. ३ = नारायण भट्टः Folio 3 = Page 6 [of स्तवचिन्तामणिः] by नारायण भट्टः।</p> <p>2. Line 06.08 – First word - How to transliterate the lower syllable in the conjunct letter with ष as the top syllable? Why should we transliterate the word as क्लिष्टं and not as क्लिष्टं or क्लिष्टं? This confusion arises because the lower syllable is written using the Special rules for ट, ठ and ध as the lower syllable in a conjunct letter. We have come across the same Special syllable while transliterating रक्षोघ्न मन्त्र। And, there we transliterated the same syllable as ट on May 18, 2020 in चतुरनुष्टुबन्तं (Line 01.02), and on May 19, 2020 in ष्ट (Line 01.04) and दंष्ट्रो (Line 01.5). On the same day (May 19, 2020), we transliterated the lower syllable in the final word of Line 01.06 as ध (Refer the word सिद्धिः). Our confusion was – In the special syllable for ध as lowermost syllable in a conjunct letter, the outward line after the curve slants downwards, the outward line after the curve special symbol for ठ does not slant but extends horizontally and we add the syllable ट as it is if it is the lowermost syllable.</p> <p>3. On May 23, 2020, Rakeshji cleared our doubts with a hand-drawn table showing the Special Conjuncts with ध, ट and ठ using Normal Rules, using Special Rules and the Practice we have adopted to avoid confusion. He added a Note: “All three written in same way. Distinction can be made in context of the word.” Thus, in our context of the first word in Line 06.08, we decipher the lower syllable as ट and transliterate the word as क्लिष्टं</p>
-------	---



Sarada to Devanagari transliteration

Page 7 Slokas L07.01 to L07.08





Sarada to Devanagari transliteration

Date 17th June 2020

L07.01	
A07.01	1 2 3 ॥ 4 5 ॥ 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 ॥ जं वि भोः ॥ २९ ॥ नमो भक्त्या नृणां मुक्त्यै*भवते भवते वते ॥
B07.01	[सह]जं विभोः (विभो) ॥२९॥ नमो भक्त्या नृणां मुक्त्यै* भवते भवते वते ॥ (तेऽवते।)
L07.02	
A07.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 ॥ 18 19 20 21 स्मृत्या नुत्या च दधते शम्भवे शम्भवे भवे ॥ ३० ॥ सर्वजः स
B07.02	स्मृत्या नुत्या च दधते (ददते) शम्भवे (शंभवे) शम्भवे भवे (शं भवे) ॥३०॥ सर्वजः स-
L07.03	
A07.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 ॥ 13 14 15 16 17 18 19 20 र्व कृत्सर्वमसीति ज्ञानशालिनां ॥ वेद्यं किं कर्म वा नाथ
B07.03	[स]र्वकृत्सर्वमसीति ज्ञानशालिनां ॥ (ज्ञानशालिनाम्।) वेद्यं किं कर्म वा नाथ
L07.04	
A07.04	1 2 3 4 5 6 7 8 ॥ 9 10 ॥ 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 नान्यन्त्याय त्वयार्पिते ॥ ३१ ॥ इच्छाया एव यस्येदं फलं लो-
B07.04	नान्यन्त्याय (नानन्त्याय) त्वयार्पिते (त्वयार्प्यते) ॥३१॥ इच्छाया एव यस्येदं (यस्येयत्) फलं लो-



Sarada to Devanagari transliteration

Date 17th June 2020 (continued...)

	<p>1. Version 3 – Transliteration of Sentences shown after Incorporating the Corrections and following the order of verses (Hyphen after लो in last line indicates that Verse 32 is to be continued in Line 07.05)</p> <p>a. [तत्क्षीरोददमैश्वर्यं तवैव सहाजं विभो॥२९॥ b. नमो भक्त्या नृणां मुक्त्यै भवते भव तेऽवते। c. स्मृत्या नृत्या च ददते शंभवे शं भवेऽभवे॥३०॥ d. सर्वज्ञाः सर्वकृत्सर्वमसीति ज्ञानशालिनाम्। e. वेद्यं किं कर्म वा नाथ नानन्त्याय त्वयार्प्यते॥३१॥ f. इच्छाया एव यस्येयत् फलं लो-</p>
Notes	<p>2. *'ऐ' मात्रा must be indicated by two horizontal lines above the शिरिरेखा। In the case of the letter क्त्यै, the horizontal line nearer to the शिरिरेखा is seen clearly. The other horizontal line has been smeared over by the orange border.</p>



Sarada to Devanagari transliteration

Date 18th June 2020 (continued...)

	<p>1. The lipography, that is omission, of visarga and the verse no. 32 are shown as the marginalia ः ३२ after गति. ** र symbol in द्र is over-run by the colouring of the lower border of the page.</p>
Notes	<p>2. Version 3 – Transliteration of Sentences after Incorporating the Corrections – Lines 07.05-07.08 (Continuation of Verse 32 from Line 07.04 is shown within square brackets. Hyphen after भ in last line indicates that the verse 34 is to be continued in Line 08.01)</p> <ol style="list-style-type: none">[इच्छाया एव यस्येयत् फलं लो] कत्रयात्मकम्।तस्य ते नाथ कार्याणां को वेत्ति कियती गतिः॥३२॥ब्रह्मादयोऽपि तदयस्य कर्मसोपानमालया।उपर्युपरि धावन्ति लब्धुं धाम नमामि तम्॥३३॥अयं ब्रह्मा महेन्द्रोऽयं सूर्याचन्द्रमसाविमौ।इति शक्तिलता यस्य पुष्पिता पात्वसौ भ-



वः॥३८॥ ह्मेनलहुरेवभृहृडुःकरलेगधि॥ दुग्गे
 गधियभृतेननभभुंभेभ्रं॥३५॥ नमःसूतेभ्रते
 नेननेभ्रनेऽघ॥ पूभ्रैर्मनरुदयमयिउयक
 धदिने॥३६॥ किंभ्रयेनेभ्रपिभनभधमभ्रु
 भयेनऽभ्रयेभ्रीभ्रिभ्रिनिकिंभ्र॥३७॥ मित्रुधि
 हधिकडुहःकेलीमिडभ्रुपलन॥ विमृभृठवठ
 वहुंमिडननेभ्रमं॥३८॥ भ्रुकेभिमैडुलेकीयंक
 लभ्रंकेषंभ्र॥ भ्रुलेषकिंभ्रुनेभ्रुदिठिगधि

न.
ठ.
८





Sarada to Devanagari transliteration

Date 19th June 2020

L08.01	
A08.01	1 ॥ 2 3 ॥ 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 ॥ 20 21 22 वः ॥ ३४ ॥ भ्र मो न ल भ्य ते य स्य भ्रान्ता न्तः कर णै र पि ॥ दूर गै
B08.01	[भ्र]वः॥३४॥ भ्रमो न लभ्यते यस्य भ्रान्तान्तःकरणैरपि॥(।) दूरगै-
L08.02	
A08.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 ॥ 14 15 ॥ 16 17 18 19 20 21 22 र पि य स्य न्तो दुर्ग म स्तं तमो
B08.02	[दूरगै]रपि यस्यन्तो(यस्यान्तो) दुर्गमस्तं तमो(स्तुमो) मृडं (मृडम)॥३५॥ नमः श्रुतौ स्मृतौ ध्या-
L08.03	
A08.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 ॥ 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 ने दर्शने स्पर्शने तथा ॥ प्राप्तौ च* नन्मवृन्माय दयिताय क
B08.03	[ध्या]ने दर्शने स्पर्शने तथा॥(।) प्राप्तौ च* नन्मवृन्माय (चानन्दवृन्दाय) दयिताय क-
L08.04	
A08.04	1 2 3 ॥ 4 5 ॥ 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 प दि ने ॥ ३६ ॥ किं स्म ये ने ति मत्वा पि म न सा प र मे श्व र
B08.04	[क]पदिने॥३६॥ किं स्मयेनेति मत्वापि मनसा परमेश्वर(परमेश्वर)।



Sarada to Devanagari transliteration

Date 19th June 2020 (continued...)

Notes	<ol style="list-style-type: none">Line 08.03: The mark above the letter च in the word च*नन्मवृन्माय is ambiguous. The correct reading of the letter is: चा The correct reading of the word is चानन्दवृन्दायVersion 3 – Transliteration of Sentences shown after Incorporating the Corrections and following the order of verses (Verse 37 is to be continued in Line 08.05)<ol style="list-style-type: none">[इति शक्तिलता यस्य पुष्पिता पात्वसौ भवः॥३४॥भ्रमो न लभ्यते यस्य भ्रान्तान्तःकरणैरपि।दूरगैरपि यस्यान्तो दुर्गमस्तं स्तुमो मृडम्॥३५॥नमः श्रुतौ स्मृतौ ध्याने दर्शने स्पर्शने तथा।प्राप्तौ चानन्दवृन्दाय दयिताय कपर्दिने॥३६॥किं स्मयेनेति मत्वापि मनसा परमेश्वर।Note on transliteration of Lines 08.01 – 08.04 - The scribe's style in writing द and म as the lower syllable in conjunct letters is almost identical. A minute difference can be observed on close observation — There is a very small vertical line dropping downwards in case of म This downward subtle line is missing in द
-------	---



Sarada to Devanagari transliteration

Date 20th June 2020

L08.05	
A08.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 18 ॥ 19 20 21 स्मये न त न्म यो स्मी ति मा मिना त्म नि किं मु दा ॥३७॥ चि न्त यि
B08.05	स्मयेन तन्मयोस्मीति(त्वन्मयोऽस्मीति) मामि नात्मनि किं मुदा॥३७॥ चिन्तयि-
L08.06	
A08.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 ॥ 15 16 17 18 19 20 त्वापि क र्त व्यः को टी चित्त स्य चा प ला त् ॥ वि श्रा म्य न्भ व भा
B08.06	[चिन्तयि]त्वापि कर्तव्यः कोटीचित्तस्य (कर्तव्यकोटिचित्तस्य) चापलात्॥(।) विश्राम्यन्भव भा-
L08.07	
A08.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 ॥ 11 12 ॥ 13 14 15 16 17 18 19 20 21 व त्कं चि त्ता न न्दे र मे भ* शं ॥ ३ ८ ॥ सू ** सि चे त्र लो की यं क
B08.07	[भा] वत्कं चित्तानन्दे ([भा]वत्कचित्तानन्दे) रमे भशं (भृशम्)॥३८॥ सू*सि(सूक्ष्मोऽसि) चेत्रलोकीयं (चेत्रलोकीयं) क।(क-)
L08.08	
A08.08	1 2 3 4 5 6 7 ॥ 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 ला मा त्रं क थं त व ॥ स्थू लो थ किं सु द र्श*न ब्र ह्मा दि भि र पि
B08.08	[क]लामात्रं कथं तव॥(।) स्थूलोथ (स्थूलोऽथ) किं सुदर्श*न (सुदर्शो न) ब्रह्मादिभिरपि



Sarada to Devanagari transliteration

Date 20th June 2020 (continued...)

Notes

1. **Line 08.07** – *The mark under भ is neither typical of र nor of ऋ** The conjunct letter between सू and सि is ambiguous
2. **Line 08.07** – *The mark under भ is neither typical of र nor of ऋ| This leads to the doubt if the word should be read as भशं(भशम्) or as भृशं(भृशम्)| The correct version is भृशम्|
3. ** The conjunct letter between सू and सि is ambiguous. The top syllable is not written in the typical style of क्ष| The bottom syllable, though not written like the typical प, looks more like प, than like म| Only the ओकार symbol above the शिरोरेखा is clear. The correct version of the conjunct letter is क्षमो and the correct version of the word is सूक्ष्मोऽसि|
4. **Line 08.08** – ***The एकार mark is written between शं and न leading to a doubt if the letters could be शं and ने respectively. Therefore, one may read the word as either सुदर्शने or as सुदर्शने| Both readings are not correct. The symbol should have been of ओकार and not of एकार| And, the ओकार symbol should be above शं| Therefore, the correct reading is सुदर्शो न|
5. **Version 3** – Transliteration of Sentences after Incorporating the Corrections – **Lines 08.05-08.08** (Line 08.05 is continuation of Verse 37 from Line 8.04, transliteration of which was completed yesterday. Hyphen after ब्रह्मादिभिरपि in last line indicates that the verse 39 is to be continued in Line 09.01)
 - a. स्मयेन त्वन्मयोऽस्मीति मामि नात्मनि किं मुदा॥३७॥
 - b. चिन्तयित्वापि कर्तव्यकोटिशिक्तस्य चापलात्|
 - c. विश्राम्यन्भव भावत्कचित्तानन्दे रमे भृशम्॥३८॥
 - d. सूक्ष्मोऽसि चेत्रिलोकीयं कलामात्रं कथं तव|
 - e. स्थूलोऽथ किं सुदर्शो न ब्रह्मादिभिरपि -



Sarada to Devanagari transliteration

Date	21 st June 2020
------	----------------------------

- Due to Surya Grahanam, break





Sarada to Devanagari transliteration

Page 9 Slokas L09.01 to L09.08





Sarada to Devanagari transliteration

Date 22nd June 2020

L09.01	
A09.01	1 2 ॥ 3 4 ॥ 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 ॥ प्र भो ॥ ३ ९ ॥ वाच्य ए षां त्व मे वे ति ना भ वि ष्य दि दं य दि ॥
B09.01	[ब्रह्मादिरपि] प्रभो ॥ ३९ ॥ वाच्य एषां त्वमेवेति नाभविष्यदिदं यदि ॥ (I)
L09.02	
A09.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 18 ॥ 19 20 ॥ कः क्लेशं दे व वाग्जा ले ष्व क रि ष्यत्सुधी स्त दा ॥ ४ ० ॥ क्रमे ।
B09.02	कः क्लेशं देव * वाग्जालेष्वकरिष्यत्सुधीस्तदा (वाग्जालेष्वकरिष्यत्सुधीस्तदा) ॥ ४० ॥ क्रमे। (क्रमे) -
L09.03	
A09.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 ॥ 15 16 17 18 19 20 ॥ ण क र्म णां के न क या वा* प्र ज या वि भो ॥ ४ श्यो सी त्यु प दे ।
B09.03	[क्रमे]ण कर्मणां (कर्मणा) केन कया वा प्रजया विभो ॥ (I) दृश्योसीत्युपदे। (दृश्योऽसीत्युपदे) -
L09.04	
A09.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 ॥ 11 12 ॥ 13 14 15 16 17 18 19 20 ॥ शे न प्र सा दः क्रि यतां म यि ॥ ४ १ ॥ न मो नि रु प का रा य ।
B09.04	[दृश्योऽसीत्युपदे]शेन प्रसादः क्रियतां मयि ॥ ४१ ॥ नमो निरुपकाराय। (निरुपकाराय) -



Sarada to Devanagari transliteration

Date 22nd June 2020 (continued...)


Notes

1. *The writing is ambiguous between वा and वा** . Generally, while showing the दीर्घ of the lower syllable in a conjunct letter, the अकार form of the lower syllable is written, e.g. ह्रस्व form of ज is written under ग as गज and the symbol for दीर्घ is added to the शिरोरेखा। But here, the scribe has added the दीर्घ form of ज, that is जा, directly under ग।
2. Version 3 – Transliteration of Sentences shown after Incorporating the Corrections and following the order of verses (Verse 41 is to be continued in Line 09.05)
 - a. [स्थूलोऽथ किं सुदर्शो न ब्रह्मादिरपि] प्रभो॥३९॥
 - b. वाच्य एषां त्वमेवेति नाभविष्यदिदं यदि।
 - c. कः क्लेशं देव वाग्जालेष्वकरिष्यत्सुधीस्तदा॥४०॥
 - d. क्रमेण कर्मणा केन कया वा प्रज्ञया विभो।
 - e. दृश्योऽसीत्युपदेशेन प्रसादः क्रियतां मयि॥४१॥
 - f. नमो निरुपकार्याय -



Sarada to Devanagari transliteration

Date 23rd June 2020

L09.05	
A09.05	1 2 3 4 5 6 7 8 ॥ 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 त्रैलोक्यैकोपकारिणे*॥ सर्वस्य स्पृहणीयाय
B09.05	[निरूपकार्याय] त्रैलोक्यैकोपकारिणे*॥(I) सर्वस्य स्पृहणीयाय (स्पृहणीयाय) दयिताय
L09.06	
A09.06	1 2 3 4 ॥ 5 6 ॥ 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 कपर्दिने॥४२॥अहोक्षेत्रज्ञतासेयंकार्यायमहतीस
B09.06	कपर्दिने॥४२॥ अहो क्षेत्रज्ञता सेयं कार्याय महती(महते) स-
L09.07	
A09.07	1 ॥ 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 ॥ 18 19 ॥ 20 तां॥ ययानन्तफलां भक्तिवपन्तीत्वय्यमीप्रभो॥४३॥म
B09.07	[स]तां ([स]ताम)॥(I) ययानन्तफलां भक्ति (भक्तिं) वपन्ती त्वय्यमी प्रभो॥४३॥ म-
L09.08	
A09.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 ॥ 16 17 18 19 20 । हतीयमहोमायातवमायिन्ययावृता॥त्वद्धाननिधि ।
B09.08	[म] हतीयमहो माया तव मायिन्ययावृता (मायिन्ययावृताः)॥(I) । त्वद्धाननिधि।(त्वद्धाननिधि)-



Sarada to Devanagari transliteration

Date 23rd June 2020 (continued...)

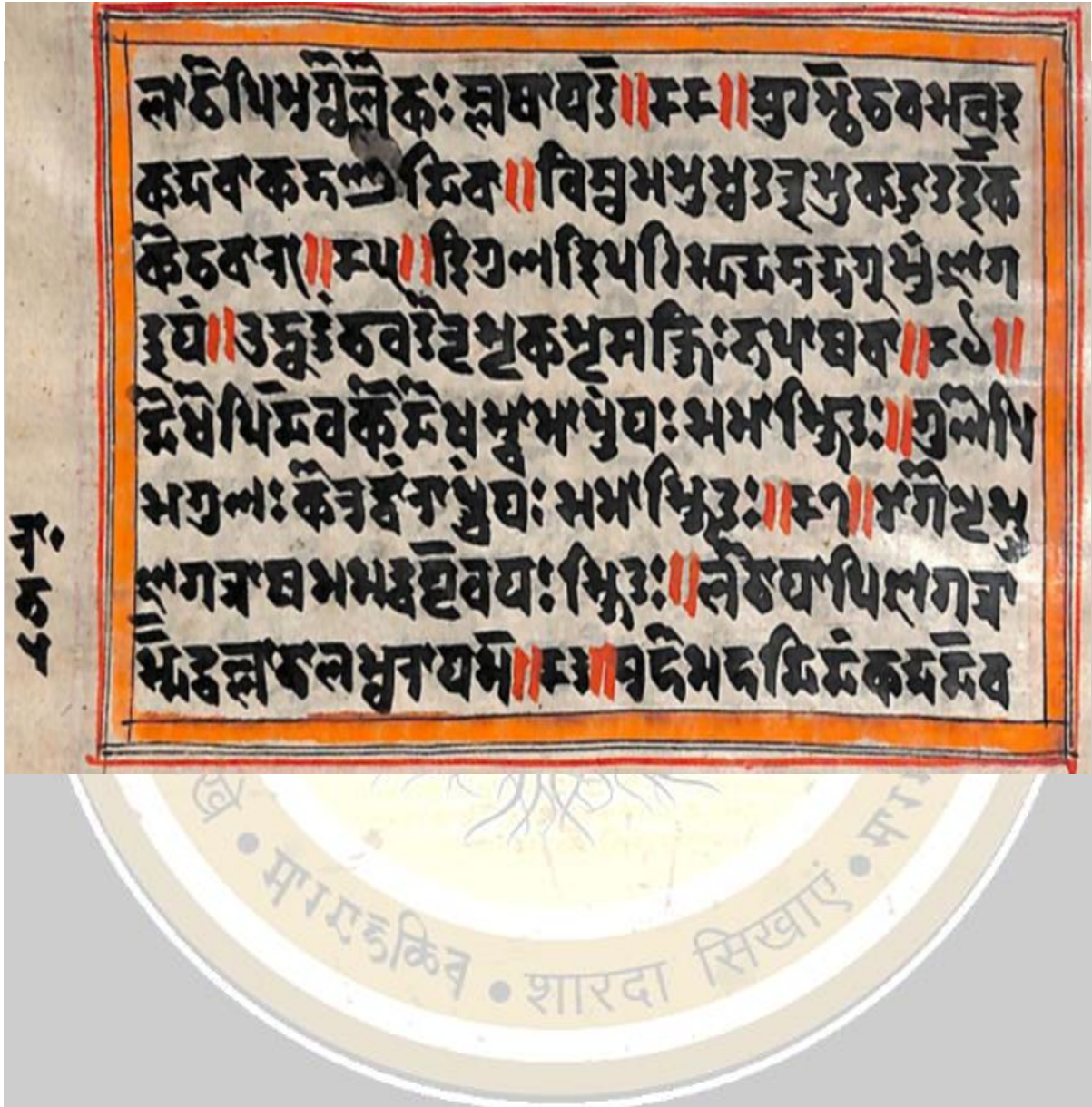
Notes

1. * णे, at first sight, looks like ल| From a reading of the manuscript so far, it will be seen that the scribe writes ण in the form we are accustomed to when it occurs as ण or णा (e.g. क्रमेण कर्मणा in Line 09.03). Where other vowel symbols like एकार, ओकार, etc. are added, the scribe tends to write ण like ल| However, a minute difference seen in such cases is that the inner curve of ण is attached higher in the vertical line and the outer free curve is shorter than in ल|
2. Version 3 – Transliteration of Sentences after Incorporating the Corrections – Lines 09.05-09.08 (Continuation of Verse 42 from Line 09.04 is shown within square brackets. Hyphen after त्वद्धाननिधि in last line indicates that the verse 44 is to be continued in Line 10.01)
 - a. [नमो निरुपकार्याय] त्रैलोक्यैकोपकारिणे।
 - b. सर्वस्य स्पृहणीयाय दयिताय कपर्दिने॥४२॥
 - c. अहो क्षेत्रज्ञता सेयं कार्याय महते सताम्।
 - d. ययानन्तफलां भक्तिं वपन्ती त्वय्यमी प्रभो॥४३॥
 - e. महतीयमहो माया तव मायिन्यावृतः।
 - f. त्वद्धाननिधि-



Sarada to Devanagari transliteration

Page 10 Slokas L10.01 to L10.08



न.
५



Sarada to Devanagari transliteration

Date 24th June 2020





L10.01	
A10.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 ॥ 12 13 ॥ 14 15 16 17 18 19 20 21 ला भो पि मुग्धो लो कः श्ल था य ते ॥ ४ ४ ॥ आ र म्भे भ व स र्व त्र
B10.01	[त्वद्धाननिधि-] लाभोऽपि मुग्धो लोकः श्लथायते॥४४॥ आरम्भे भव सर्वत्र
L10.02	
A10.02	1 2 3 4 5 6 7 8 ॥ 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 क र्म वा क रू णा दि वा ॥ वि श्व म स्तु स्व त न्त्र स्तु क र्ता त त्रै क
B10.02	कर्म वा करुणादि वा ॥ विश्वमस्तु स्वतन्त्रस्तु कर्ता तत्रैक
L10.03	
A10.03	1 2 3 4 ॥ 5 6 ॥ 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 को भ वा न् ॥ ४ ५ ॥ त्रि गु ण त्रि प रि स्प न्द द्वा न्द्व ग्ग स्तं ज ग
B10.03	को भवान् ॥४५॥ त्रिगुण त्रिपरिस्पन्दद्वन्द्वग्रस्तं जग
L10.04	
A10.04	1 2 ॥ 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 ॥ 19 20 ॥ त्र यं ॥ उ द्ध र्तुं भ व तो ऽ न्य स्य क स्य श क्तिः कृ पा थ वा ॥ ४ ६ ॥
B10.04	त्रयं ॥ उद्धर्तुं भवतोऽन्यस्य कस्य शक्तिः कृपाथवा ॥४६॥

- Notes
- 3rd version –
 - [त्वद्धाननिधि-] - लाभोऽपि मुग्धो लोकः श्लथायते ॥ ४४ ॥
 - आरम्भे भव सर्वत्र कर्म वा करुणादि वा ॥ विश्वमस्तु स्वतन्त्रस्तु कर्ता तत्रैक को भवान् ॥ ४५ ॥
 - त्रिगुणत्रिपरिस्पन्दद्वन्द्वग्रस्तं जगत्त्रयं ॥ उद्धर्तुं भवतोऽन्यस्य कस्य शक्तिः कृपाथवा ॥ ४६ ॥



Sarada to Devanagari transliteration

Date 25th June 2020

L10.05	
A10.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 दो षो पि दे व को दो ष स्त्वा मा प्तुं यः स मा स्थि तः ॥ गु णो पि
B10.05	दोषोऽपि देव को दोषस्त्वामाप्तुं यः समास्थितः ॥ गुणोऽपि
L10.06	
A10.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 स गु णः को नु त्वां ना प्तुं यः स मा स्थि तः ॥ ४ ७ ॥ रा गो प्यस्तु
B10.06	सगुणः को नु त्वां नाप्तुं यः समास्थितः ॥४७॥ रागोऽप्यस्तु
L10.07	
A10.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 ज ग न्ना थ म म त्व य्यै व यः स्थि तः ॥ लो भा या पि (ज ग न्ना) नमस्त-
B10.07	जगन्नाथ मम त्वय्यैव यः स्थितः ॥ लोभायापि नमस्त-
L10.08	
A10.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 स्मै त्व ल्ला भा ल म्ब ना य मे ॥ ४ ८ ॥ अ हो म ह दि दं क र्म दे व
B10.08	स्मै त्वल्लाभालम्बनाय मे ॥४८॥ अहो महदिदं कर्म देव

Notes

1. In 10.07 – there should be नमस्तस्मै but it is mistakenly written a ज ग न्ना by scribe.
2. Version - 3
 - a. -दोषोऽपि देव को दोषस्त्वामाप्तुं यः समास्थितः ॥ गुणोऽपि च सगुणः को नु त्वां नाप्तुं यः स्थितः ॥४७॥ रागोऽप्यस्तु जगन्नाथ मम त्वय्यैव यः स्थितः ॥ लोभायापि नमस्तस्मै त्वल्लाभालम्बनाय मे ॥४८॥ अहो महदिदं कर्म देव -



Sarada to Devanagari transliteration

- b. Hyphen after अहो महददं कर्म देव in last line indicates that the verse 50 is to be continued in Line 11.01.

Page 11 Slokas L11.01 to L11.08





Sarada to Devanagari transliteration

Date 26th June 2020

L11.01	
A11.01	1 2 3 4 5 6 ॥ 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 त्वद्भावनात्मकं ॥ आ ब्र ह्म क्र मि य स्मि न्नो मु क्तये धि क्रि ये-
B11.01	त्वद्भावनात्मकं ॥ आब्रह्मक्रमि (क्रिमि is another) यस्मिन्नो मुक्तयेऽधिक्रिये-
L11.02	
A11.02	1 2 ॥ 3 4 ॥ 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 त कः ॥ ४ ९ ॥ आ र म्भ स र्व कार्या णां प र्य न्तः स र्व क र्म णां
B11.02	त कः ॥ ४ ९ ॥ आरम्भसर्वकार्याणां पर्यन्तः सर्वकर्मणां
L11.03	
A11.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 ॥ 18 19 20 त द न्त र्वृ त्त य श्चि त्रा स्त वै वे श धि यः प थिः ॥ ५० ॥ या व दु
B11.03	तदन्तर्वृत्त यश्चित्रास्तवैवेश धियः पथिः (पथि is correct reading) ॥ ५० ॥ यावदु
L11.04	
A11.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 ॥ 14 15 16 17 18 19 20 त र मा स्वा दु स ह स्त्र गु ण वि स्त रः ॥ त्व द्भ क्ति र स पी यू-
B11.04	तरमास्वादुसहस्त्रगुणविस्तरः ॥ त्वद्भक्तिरसपीयू-



Sarada to Devanagari transliteration

Date 26th June 2020 (continued...)

L11.05	
A11.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 ॥ 10 11 ॥ 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 षा न्ना थ ना न्यत्र दृ श्य ते ॥ ५१ ॥ उ प सं ह त का मा य का मा य-
B11.05	षान्नाथ नान्यत्र दृश्यते॥५१॥ उपसंहतकामाय कामाय-
L11.06	
A11.06	1 2 3 4 5 ॥ 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 ॥ 22 23 त्य व तन्वते ॥ अ व तं सित सोमा य सो मा य स्वा मि नेन मः॥५२॥
B11.06	त्यव(तिम) तन्वते ॥ अवतंसितसोमाय सोमाय स्वामिने नमः॥५२॥
L11.07	
A11.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 18 19 20 21 कि म श क्तः क रो मी ति स र्व त्रा न ध्यव स्यतः॥ स र्वी नु ग्रा हि-
B11.07	किमशक्तः करोमीति सर्वत्रानध्यवस्यतः॥ सर्वानुग्राहि-
L11.08	
A11.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 ॥ 12 13 ॥ 14 15 16 17 18 19 । कः श क्तिः शा ङ्क री श र णं म म ॥ ५ ३ ॥ गु णा ती त स्य नि-
B11.08	कः (का) शक्तिः शाङ्करी शरणं मम॥५३॥ गुणातीतस्य नि-



Sarada to Devanagari transliteration

Date 26th June 2020 (continued...)

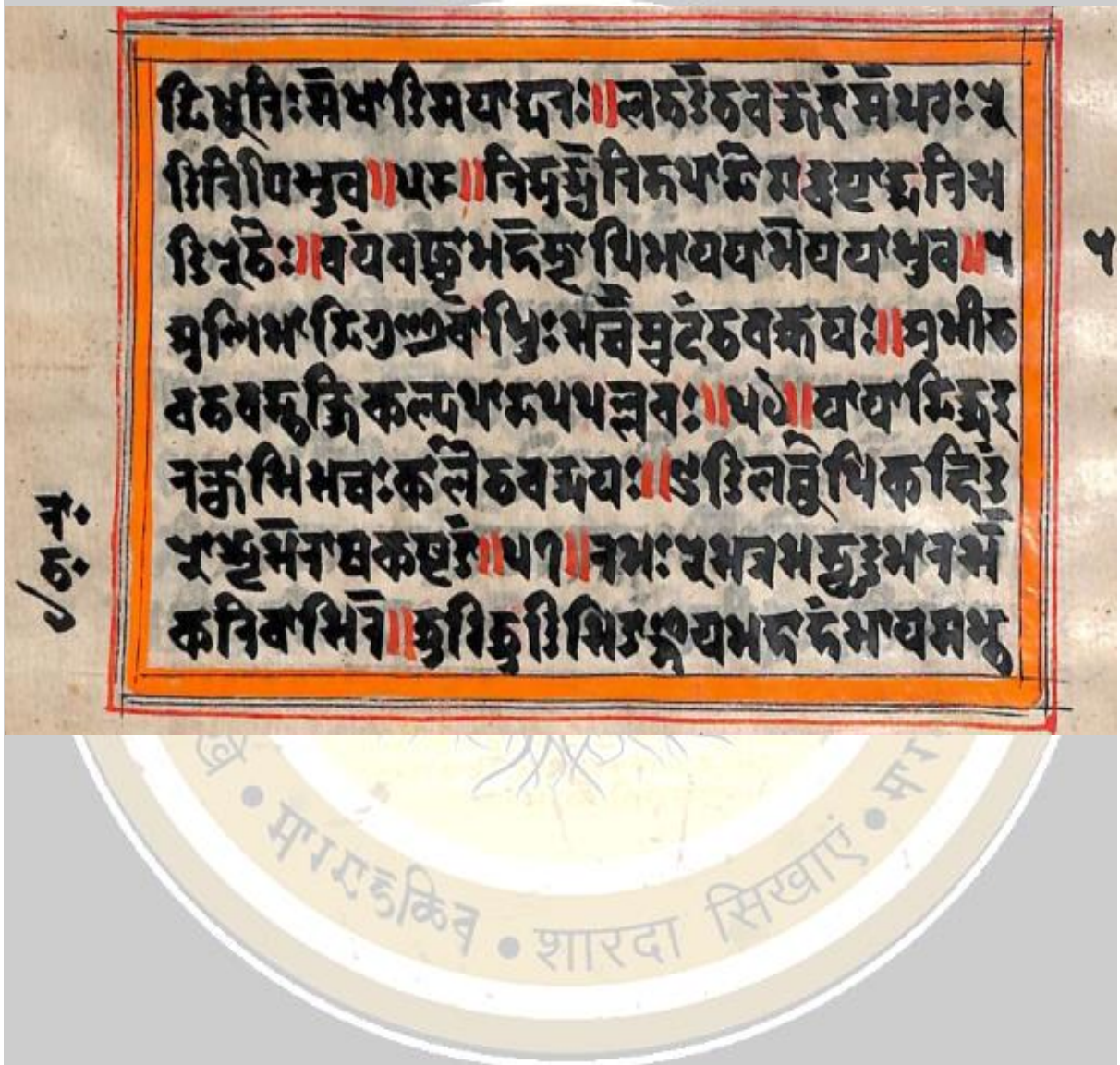
Notes

1. In Line 11.01 there are two readings, one is क्रमि and another is क्रिमि. both are Sanskrit words so both are fine. In Kshemraj's commentary he has used क्रिमि word.
2. In Line 11.03 पथिः is scribe error, because पथिः is wrong form according to grammar.
3. In Line 11.04 - line I found स्वादसहस्त्र reading in other commentary, so स्वादसहस्त्र also can be another reading.
4. In Line 11.05, न is a scribe error. The correct letter is न्न. Again the letter looks like त, but I saw in commentary there Kshemraj has written उपसंहृत
5. In Line 11.06 – कामायतिमत्नवते - this reading is given in Kshemraj's commentary.
6. In Line 11.08 – सर्वानुग्राहिका will be correct reading because शक्तिः is feminine word.
7. Version – 3
 - a. [अहो महदिदं कर्म देव] - त्वद्भावनात्मकं॥आब्रह्मक्रमि (क्रिमि) यस्मिन्नो मुक्तयेऽधिक्रियेत कः॥४९॥
 - b. आरम्भसर्वकार्याणां पर्यन्तः सर्वकर्मणां तदन्तर्वृत्त यश्चित्रास्तवैवेश धियः पथि॥५०॥ यावदुत्तरमास्वादसहस्त्रगुणविस्तरः ॥त्वद्भक्तिरसपीयू- -षान्नाथ नान्यत्र दृश्यते ॥५१॥
 - c. उपसंहृतकामाय कामायत्यव (तिम)तन्वते॥ अवतंसितसोमाय सोमाय स्वामिने नमः॥५२॥
 - d. किमशक्तः करोमीति सर्वत्रानध्यवस्यतः॥ सर्वानुग्राहिकः(का) शक्तिः शाङ्करी शरणं मम॥५३॥ गुणातीतस्य नि
8. अहो महदिदं कर्म देव - Continuation of Verse 49 from Line 10.08 is shown within square brackets.
9. Hyphen after गुणातीतस्य नि- in Line 11.08 indicates that the verse 53 is to be continued in Line 12.01.
10. So क्रिमि, पथि, मास्वादसहस्त्र and सर्वानुग्राहिका these changes should be noted



Sarada to Devanagari transliteration

Page 12 Slokas L12.01 to L12.08





Sarada to Devanagari transliteration

Date 27th June 2020

L12.01	
A12.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 ॥ 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 दि ष्ट निः शे षा ति श या त्म नः ॥ ल भ ते भ व कु त्रां शे परः प्र-
B12.01	[गुणातीतस्य नि -] -दिष्ट निःशेषातिशयात्मनः॥लभते भव कुत्रांशे परः प्र-
L12.02	
A12.02	1 2 3 4 5 ॥ 6 7 ॥ 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 ति नि धि स्त व ॥ ५ ४ ॥ नि र्द्व न्द्वे नि रु पा दौ च त्व य्या त्म नि स
B12.02	तिनिधिस्तव॥५४॥ निर्द्वन्द्वे निरुपादौ (धौ) च त्वय्यात्मनि स
L12.03	
A12.03	1 2 3 ॥ 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 ॥ 20 ति प्र भो ॥ व यं व ञ्चा म हे द्या पि मा य या मे य या स्त व ॥५५॥
B12.03	ति प्रभो॥वयं वञ्चामहेऽद्यापि माययामेयया स्तव (तव)॥५५॥
L12.04	
A12.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 18 20 अ णि मा दि गु णा वा प्तिः स र्वै श्व र्यं भ व क्ष यः ॥ अ मी भ-
B12.04	अणिमादिगुणावाप्तिः सर्वैश्वर्यं भवक्षयः ॥ अमी भ-



Sarada to Devanagari transliteration

Date	27 th June 2020 (continued...)
L12.05	व भवद्भक्ति कल्प पाद पल्लवः ॥ ५६ ॥ या या दिक् तत्र
A12.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 ॥ 14 15 ॥ 16 17 18 19 20 व भ वद्भ क्ति क ल्प पा द प प ल्ल वः ॥ ५ ६ ॥ या या दि क्त त्र
B12.05	व भवद्भक्तिकल्पपादपल्लवः (वाः) ॥ ५६ ॥ या या दिक् तत्र
L12.06	न क्वासि सर्वः कालो भवन्मयः ॥ इति लब्धोऽपि कर्हि तं (त्वं)
A12.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 ॥ 12 13 14 15 16 17 18 19 न क्वा सि स र्वः का लो भ व न्म यः ॥ इ ति ल ब्धो पि क र्हि तं
B12.06	न क्वासि सर्वः कालो भवन्मयः ॥ इति लब्धोऽपि कर्हि तं (त्वं)
L12.07	प्राप्स्यसे नाथ कथ्यतां ॥ ५७ ॥ नमः प्रसन्नसद्वृत्तमानसै-
A12.07	1 2 3 4 5 6 7 8 ॥ 9 10 ॥ 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 प्रा प्स्य से ना थ क थ्य तां ॥ ५ ७ ॥ न मः प्र स न्न स द्वृ त्त मा न सै
B12.07	प्राप्स्यसे नाथ कथ्यतां ॥ ५७ ॥ नमः प्रसन्नसद्वृत्तमानसै-
L12.08	क निवासिने भुरिभुति-सिताङ्गाय महाहंसाय शम्भ-
A12.08	1 2 3 4 5 ॥ 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 क नि वा सि ने ॥ भु रि भु ति - सि ता ङ्गा य म हा हं सा य श म्भ-
B12.08	क निवासिने भुरिभुति (भूरिभूति)- सिताङ्गाय महाहंसाय शम्भ -



Sarada to Devanagari transliteration

Date 27th June 2020 (continued...)

Notes

1. In Line 12.02 - Please see how निर्द्वन्द्वे word has written. (Little difference)
2. In Line 12.02 - Correct reading will be निरुपाधौ (it's निरुपाधि word, सप्तमी एकवचनं will be - निरुपाधौ). there is no word as निरुपादौ.
3. In Line 12.03 – there should be तव, not स्तव, it is scribe error. (अन्वय -हे प्रभो! वयम् अद्यापि तव अमेयया मायया वञ्चामहे)
4. Line 12.05 – पल्लवाः reading will be better than पल्लवः because in that quarter अमी word is used so, अमी पल्लवाः will be correct.
5. Line 12.06 – I think कर्हि त्वं will be right, not तं. Because प्राप्स्यसे is कर्मणि प्रयोग
6. Line 12.08 - भूरिभूति word will be wrong, that should be भूरिभूति. (दीर्घ उकार)
7. Version – 3 –
 - a. दिष्ट निःशेषातिशयात्मनः ॥ लभते भव कुत्रांशे परः प्रतिनिधिस्तव ॥५४॥
 - b. निर्द्वन्द्वे निरुपाधौ च त्वय्यात्मनि सति प्रभो ॥ वयं वञ्चामहेऽद्यापि माययामेयया तव ॥५५॥
 - c. अणिमादिगुणावाप्तिः सर्वेश्वर्यं भवक्षयः ॥ अमी भव भवद्भक्तिकल्पपादपल्लवाः ॥५६॥
 - d. या या दिक् तत्र न क्वासि सर्वः कालो भवन्मयः ॥ इति लब्धोऽपि कर्हि त्वं लप्स्यसे नाथ कथ्यतां ॥५७॥ नमःप्रसन्नसद्वृत्तमानसैक निवासिने भूरिभूति- सिताङ्गाय महाहंसाय शम्भ -
8. गुणातीतस्य नि -- Continuation of Verse 54 from Line 11.08 is shown within square brackets.
9. • Hyphen after नमःप्रसन्नसद्वृत्तमानसैक निवासिने भूरिभूति- सिताङ्गाय महाहंसाय शम्भ - in last line indicates that the verse 58 is to be continued in Line 13.01.



Sarada to Devanagari transliteration

Date 27th June 2020 (continued...)

Hindi to Sarada Transliteration exercise

इमं विश्वपरिस्पन्दं करोमीत्यस्तवासनम् ।
प्रवर्तते यः कार्येषु स मुक्त इति मे मतिः ॥
यः कुर्वन् सर्वकार्याणि पुष्टे नष्टेऽथ तत्फले ।
समः सन् सर्वकार्येषु न तुष्यति न शोचति ॥
तमांसीव दिवा यान्ति तत्र द्वन्द्वानि संक्षयम् ।
शरदीव घनास्तत्र गुणा गच्छन्ति शुद्धताम् ॥
पेशलाचारमधुरं सर्वे वाञ्छन्ति तं जनाः ।
वेणुं मधुरनिध्वानं वने वनमृगा इव ॥



Sharda

उभं विस्वपरिभृत् कौभीडभुवभनभा।
 प्वरुते यः कादेषु भ भृत् उति मे भतिः॥
 यः कुवना भवकादलि पृषु नपूष उडुले।
 भमः भना भवकादेषु न उधृति न मैगति॥
 उभांभीव रिवा यान्ति उड् दृगुनि भंक्रयभा।
 सरसीव यनाभृत् गुल गमूनि सुदूउभा॥
 येमलागारभपुं भवे वागुनि उं एनाः।
 वैलं भपुगनिपुनं वने वनभृगा उव॥

Page 13 Slokas L13.01 to L13.08

वे॥५॥ हरेः सुउभभृत् भृत् भृत् मेधठवेवुन ॥ हरेः य
 मीधिकमेभुत् सुदृक् क्रिमीधिक ॥५॥ विभभृ
 नेकभृत् एगठेइलेहनएके ॥ प्रभुवदभंनरेड
 उः केशकविः क्रमः ॥६॥ नभः भृत् भृत् कडभभं
 भृत् भवय ॥ भृत् इयभृत् इयहृत् सुदेकमलिन ॥
 इलेके थिश्येयव नरुः कप्रिमीकृत् ॥ भविभृत्
 भृत् वरुदेवभृत् भृत् भृत् गभृत् ॥७॥ मदेवृत् मयेय
 हृत् येविभृत् भृत् भृत् ॥ नभेवभः भिवयेति एपहृत्



Sarada to Devanagari transliteration

Date	29 th June 2020
L13.01	वे॥पा॥होहोउउमभुउमधुमेधठवेउउ॥इडेप
A13.01	1 ॥ 2 3 ॥ 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 ॥ 20 21 22 वे ॥ ५ ८ ॥ ह तो दधतत म स्वान्त प्लु ष्टा शे ष भ वेन्धना ॥ त्वद्बोध-
B13.01	[वे ॥५८॥हतोदधततमस्वान्तप्लुष्टाशेष भवेन्धना॥ त्वद्बोध-
L13.02	दीपिकमेभुउसुइरुकिदीपिक॥५९॥विसुष्टा
A13.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 ॥ 14 15 ॥ 16 17 18 दी पि का मे स्तुनाथ त्व द्भ क्ति दी पि का ॥ ५ ९ ॥ वि सृ ष्टा
B13.02	दीपिका मेऽस्तु नाथ त्वद्भक्तिदीपिका॥५९॥ विसृष्टा-
L13.03	नेकसद्बिजगर्भं त्रैलोक्यनाटकं॥प्रस्तावहरसंहर्तुत्व
A13.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 ॥ 14 15 16 17 18 19 20 21 22 ने क स द्बि ज ग र्भं त्रै लो क्य ना ट कं ॥ प्र स्ता व हर सं ह र्तु त्व
B13.03	नेकसद्बिजगर्भं त्रैलोक्यनाटकं॥ प्रस्ताव हर संहर्तु त्व-
L13.04	इकेशकविःक्रमः॥६०॥नमःभद्रभद्रकडुभभद्रं



Sarada to Devanagari transliteration

A13.04	1 2 3 4 5 6 7 ॥ 8 ॥ 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 तः को न्यः क विः क्ष मः ॥६०॥ न मः सद सतां कर्तु म सत्वं
B13.04	तः कोऽन्यः कविः क्षमः ॥६०॥ नमः सदसतां कर्तुमसत्वं




Date 29th June 2020 (continued...)

L13.05	
A13.05	1 2 3 4 5 ॥ 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 ॥ स त्व मे व वा ॥ स्व तन्त्राया स्व तन्त्राय व्ययै श्वर्यै कशा लिने ॥
B13.05	सत्वमेव वा (सेवया) ॥ स्वतन्त्रायास्वतन्त्राय व्ययैश्वर्यैकशालिने ॥६१॥
L13.06	
A13.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 18 19 20 त्रै लो क्ये पि त्र यो या वा ना न न्दः क शि च दी क्ष्यते ॥ स बि न्दु र्य-
B13.06	त्रैलोक्येऽपि त्र (प्यत्र) यो यावानन्दः कश्चिदीक्ष्यते ॥ सविन्दुर्य-
L13.07	
A13.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 ॥ 14 15 ॥ 16 17 18 19 20 21 22 स्य तं व न्दे दे व मा न न्द सा ग र म् ॥ ६ २ ॥ अ हो ब्र ह्मा द यो ध-
B13.07	स्य तं वन्दे देवमानन्दसागरम् ॥६२॥ अहो ब्रह्मादयो ध-

६१



Sarada to Devanagari transliteration

L13.08	
A13.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 ॥ 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 न्या ये वि मु क्तान्यसं क थं ॥ न मो न मः शि वा ये ति ज प न्त्या हला-
B13.08	न्या ये विमुक्तान्यसत्कथं॥ नमो नमः शिवायेति जपन्त्याहला -

Date 29th June 2020 (continued...)

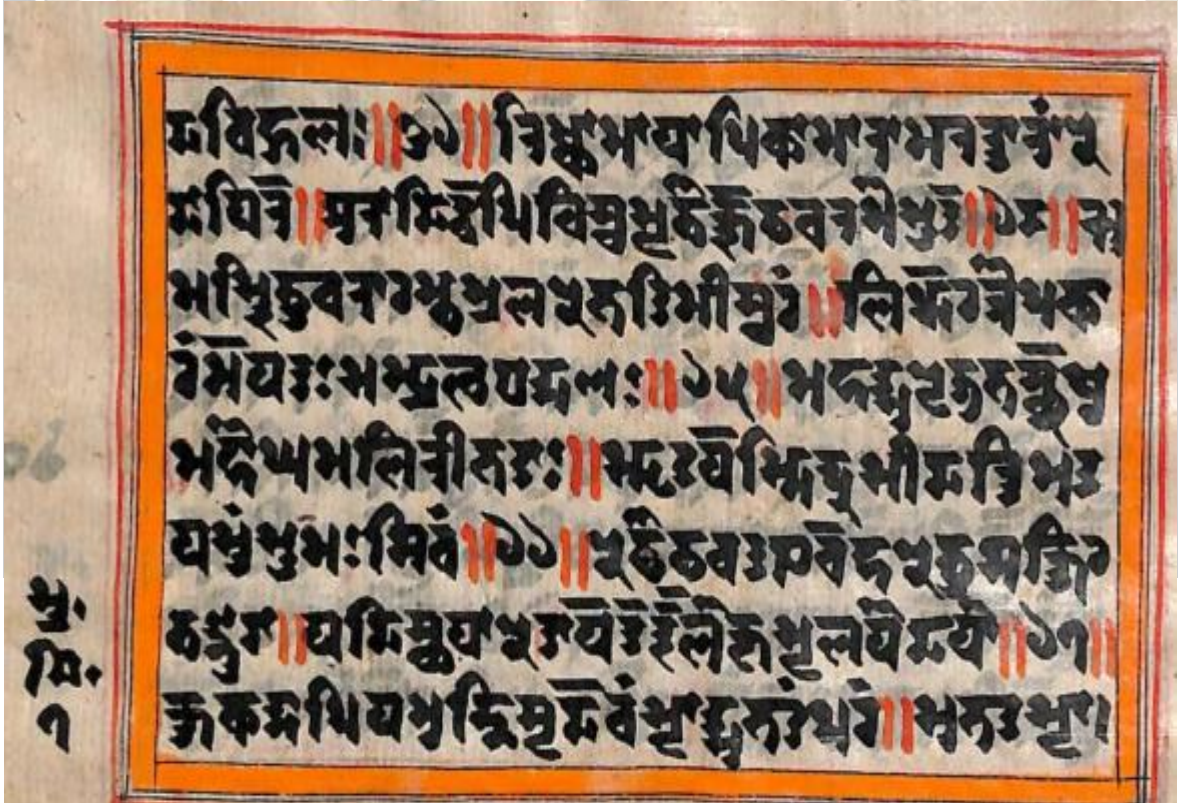
Notes	<ol style="list-style-type: none">1. In Line 13.05 it looks like सेवया, but it is सत्वमेव वा।2. In Line 13.06 there त्रैलोक्येऽप्यत्र will be correct reading.3. In Line 13.08 the 8th character does not resemble a normal क, but कथं is better reading4. Version – 3 –<ol style="list-style-type: none">a. [नमःप्रसन्नसद्वृत्तमानसैक निवासिने भुरिभुति (भूरिभूति)- सिताङ्गाय महाहंसाय शम्भ] - वे ॥५८॥b. हतोद्धततमस्वान्तप्लुष्टाशेष भवेन्धना॥ त्वद्बोधदीपिका मेऽस्तु नाथ त्वद्भक्तिदीपिका॥५९॥c. विसृष्टानेकसद्बिजगर्भं त्रैलोक्यनाटकं॥ प्रस्ताव हर संहर्तु त्वत्तः कोऽन्यः कविः क्षमः॥६०॥d. नमः सदसतां कर्तुमसत्त्वं सत्वमेव वा ॥ स्वतन्त्रायास्वतन्त्राय व्ययैश्वर्यकशालिने ॥६१॥e. त्रैलोक्येऽप्यत्र यो यावानन्दः कश्चिदीक्ष्यते॥ सबिन्दुर्यस्य तं वन्दे देवमानन्दसागरम्॥६२॥f. अहो ब्रह्मादयो धन्या ये विमुक्तान्यसत्कथं॥ नमो नमः शिवायेति जपन्त्याहला - गुणातीतस्य नि
--------------	--



Sarada to Devanagari transliteration

5. [नमःप्रसन्नसद्वृत्तमानसैक निवासिने भूरिभूतिसिताङ्गाय महाहंसाय शम्भ Continuation of Verse 58 from Line 12.08 is shown within square brackets]
6. Hyphen after - अहो ब्रह्मादयो धन्या ये विमुक्तान्यसत्कथं॥ नमो नमः शिवायेति जपन्त्याहता - in Line 13.08 indicates that the verse 63 is to be continued in Line 14.01.

Page 14 Slokas L14.01 to L14.08





Sarada to Devanagari transliteration

Date	30 th June 2020
L14.01	
A14.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 द वि ह्व लः ॥ ६ ३ ॥ नि ष्का मा या पि का मा ना म नन्तानां प्र-
B14.01	दविह्वलः (लाः)॥६३॥ निष्कामायपि कामानामनन्तानां प्र-
L14.02	
A14.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 दा यि ने ॥ अना दि त्वे पि वि श्वस्य भो क्त्रे भ व नमोऽस्तु ते ॥ ६ ४ ॥ स्तु-
B14.02	दायिने॥ अनादित्वेऽपि विश्वस्य भोक्त्रे भव नमोऽस्तु ते ॥६४॥ स्तु-
L14.03	
A14.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 म स्त्रि भु व ना र म्भ मूल प्र कृ ति मी श्व रं ॥ लि प्से रन्नो प का-
B14.03	मस्त्रिभुवनारम्भमूलप्रकृतिमीश्वरं॥ लिप्सेरन्नोपका-



Sarada to Devanagari transliteration

B14.07	भङ्गुरा॥ यदिच्छया प्रतायेते त्रैलोक्यस्य लयोदयौ॥६७॥
L14.08	
A14.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16॥ 17 18 19 20 । कु क र्मा पि य मु द्दि श्य दे वं स्या त्सु कृ तं प रं॥ सु कृ त स्या..
B14.08	कुकर्मापि यमुद्दिश्य देवं स्यात्सुकृतं परं॥सुकृतस्या....

Date 30th June 2020 (continued...)

1. In Line 14.01 there should be plural - आह्लादविह्वलाः, not singular as आह्लादविह्वल. because in previous quarter of the verse in same verse we saw – ब्रह्मादयः धन्याः ये.
2. In 14.05 there is a scribe error – स्मृते यस्मिन् will be correct reading, not स्मृतयेस्मिन् - because grammatically यस्मिन् स्मृते सति मतयः प्रसीदन्ति - (सति सप्तमी rule). (scribe misplaced एकार मात्रा)
3. [अहो ब्रह्मादयो धन्या ये विमुक्तान्यसत्कथं॥ नमो नमः शिवायेति जपन्त्याह्ला] Continuation of Verse 63 from Line 13.08 is shown within square brackets]
4. Hyphen after - कुकर्मापि यमुद्दिश्य देवं स्यात्सुकृतं परं ॥सुकृतस्या - in Line 14.08 indicates that the verse 68 is to be continued in Line 15.01.

Notes

5. Version – 3:
 - a. [अहो ब्रह्मादयो धन्या ये विमुक्तान्यसत्कथं॥ नमो नमः शिवायेति जपन्त्याह्ला] दविह्वलाः॥६३॥
 - b. निष्कामायापि कामानामनन्तानां प्रदायिने॥ अनादित्वेऽपि विश्वस्य भोक्त्रे भव नमोऽस्तु ते ॥६४॥
 - c. स्तुमस्त्रिभुवनारम्भमूलप्रकृतिमीश्वरं॥लिप्सेरन्नोपकारं मे (के) यतः सम्पूर्णधर्मणः॥६५॥



Sarada to Devanagari transliteration

- d. महत्स्वप्यर्थकृच्छ्रेषु महौघमलिनीकृताः॥ स्मृते यस्मिन् प्रसीदन्ति मतयस्तं स्तुमः शिवं॥६६॥
- e. प्रभो भवत एवेह प्रभुशक्तिरभङ्गुरा॥ यदिच्छया प्रतायेते त्रैलोक्यस्य लयोदयौ॥६७॥
- f. कुकर्मापि यमुद्दिश्य देवं स्यात्सुकृतं परं ॥सुकृतस्या....

Page 15 Slokas L15.01 to L15.08





Sarada to Devanagari transliteration

L15.04	
A15.04	1 2 3 4 5 6 7 ॥ 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 कृतः परतः परं ॥ यस्य वेदात्मिकाज्ञेय अहो गम्भीरसु-
B15.04	कृतः परतः परं ॥ यस्य वेदात्मिकाज्ञेय अहो गम्भीरसु-




Date 1st July 2020 (continued...)

L15.05	
A15.05	1 2 ॥ 3 4 ॥ 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 न्दरी ॥ ७० ॥ विधिरादिस्तथान्तोऽसि विश्वस्य परमेश्वर ॥
B15.05	न्दरी ॥ ७० ॥ विधिरादिस्तथान्तोऽसि विश्वस्य परमेश्वर ॥
L15.06	
A15.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 ॥ 18 19 ॥ 20 21 22 धर्मग्रामः प्रवृत्तो यः त्वतो न सकुतो भवेत् ॥ ७१ ॥ नमस्ते
B15.06	धर्मग्रामः प्रवृत्तो यः त्वतो न सकुतो भवेत् ॥ ७१ ॥ नमस्ते
L15.07	
A15.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 ॥ 14 15 16 17 18 19 20 भवसम्भ्रान्त भ्रान्ति मुद्भाव्य विन्दते ॥ ज्ञानानन्दं च निर्द्व-



Sarada to Devanagari transliteration

B15.07	भवसम्भ्रान्तभ्रान्तिमुद्भाव्य विन्दते ॥ ज्ञानानन्दं च निर्द्व-
L15.08	
A15.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 ॥ 10 11 ॥ 12 13 14 15 16 17 18 19 20 न्द्वं दे व वृ त्त्वा वि वृ ष्वते ॥ ७ २ ॥ य स्याः प्राप्ये त पर्यन्त वि...
B15.08	-न्द्वं देव वृत्वा विवृष्वते॥७२॥ यस्याः प्राप्येत पर्यन्त वि...

Date	1 st July 2020 (continued...)
	<p>1. [कुकर्मापि यमुद्दिश्य देवं स्यात्सुकृतं परं ॥सुकृतस्या] Continuation of Verse 68 from Line 14.08 is shown within square brackets.</p> <p>2. Hyphen after - यस्याः प्राप्येत पर्यन्त वि...- in Line 15.08 indicates that the verse 73 is to be continued in Line 16.01</p> <p>3. Version – 3:</p> <p>a. [कुकर्मापि यमुद्दिश्य देवं स्यात्सुकृतं परं ॥सुकृतस्या.....] पि सौकृत्यं यतोऽन्यत्र न सोऽसि भोः॥६८॥</p> <p>b. एष मुष्ट्या गृहितोऽसि दृष्ट एष क्व यासि नः॥ इति भक्तिरसाध्माता धन्या धावन्ति धूर्जटिं॥६९॥</p>
Notes	<p>c. स्तुमस्त्वामृग्यजुःसाम्नां शुक्रतः परतः परं॥ यस्य वेदात्मिकाजेयमहो गम्भीरसुन्दरी॥७०॥</p> <p>d. विधिरादिस्तथान्तोऽसि विश्वस्य परमेश्वर॥धर्मग्रामः प्रवृत्तो यः त्वतो न स कुतो भवेत्॥७१॥</p> <p>e. नमस्ते भवसम्भ्रान्तभ्रान्तिमुद्भाव्य विन्दते ॥ ज्ञानानन्दं च निर्द्वन्द्वं देव वृत्वा विवृष्वते॥७२॥</p> <p>f. यस्याः प्राप्येत पर्यन्त वि...</p>



Sarada to Devanagari transliteration

Page 16 Slokas L16.01 to L16.08

मथैःकैद्यैगथैः॥ भवामकत्रिमथैलभसंभुं पडुनः
मिवः॥१८॥ वैरुभृगडिगुंवील्लनभृपभंमिथं॥ वै
भदभृपंकेरिं विहृतेकुं पडुःपूठिः॥१८॥ इरुले
थिरुवत्रुडकभृनेमःइभीमिडः॥ एगडुनृलकनृ
लकियइमिडिवेडिकः॥१५॥ किभट्टेउनुठिःकिंम
भरुद्धिःभुभठिभुष॥ भवभृनेभमेमइंयउमडुठ
वरुवग॥१७॥ एयतिभेदभयदिभलभङ्गलनक
भः॥मेवयेगठलरुषुकिहृथीग्रथविभूषः॥११॥

न.
ठ.
ड



Sarada to Devanagari transliteration




Date 2nd July 2020




L16.01	
A16.01	1 2 3 4 5 6 7 ॥ 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 शे षैः कै र्म नोर थैः ॥ मा या भे क नि मे षे ण मु ष्णं स्त्वां पा तु नः
B16.01	शेषैः कैर्मनोरथैः ॥ मायामेकनिमेषेण मुष्णंस्त्वां पातु नः
L16.02	
A16.02	1 2 ॥ 3 4 ॥ 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 ॥ शि वः ॥ 7 4 ॥ वै रा ग्य स्य ग तिं गु र्वी जा न स्य पर मां श्रि यं ॥ नै-
B16.02	शिवः ॥ ७३ ॥ वैराग्यस्य गतिं गुर्वी जानस्य परमां श्रियं। नै-
L16.03	
A16.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 ॥ 16 17 ॥ 18 19 20 स्पृ ह स्य प रां को टिं बि भ्र तां त्वां प्र भुः प्र भोः ॥ ७ ४ ॥ ब्र ह्म णो



Sarada to Devanagari transliteration

B16.03	स्पृहस्य परां कोटिं बिभ्रतां त्वां प्रभुः प्रभोः॥७४॥ ब्रह्मणो
L16.04	
A16.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 पि भवान्ब्र ह्म कस्यने शः त्व मी शि तुः ॥ ज ग त्कल्या ण क ल्या-
B16.04	पि भवान् ब्रह्म कस्य नेशः त्वमीशितुः॥जगत्कल्याणकल्या-

Date 2nd July 2020 (continued...)

L16.05	
A16.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 णं किय त्व मि ति वे ति कः ॥ ७ ५॥ कि म न्यै र्बन्धु भिः किं च
B16.05	णं कियत्त्वमिति वेत्ति कः॥७५॥ किमन्यैर्बन्धुभिः किं च
L16.06	
A16.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 सु हृ द्भिः स्वा म भि स्त था ॥ स र्व स्था ने म मे श त्वं य उ द र्ता भ-
B16.06	सुहृद्भिः स्वामिभिः (स्वामिभिः)स्तथा ॥ सर्वस्थाने ममेश त्वं य उदर्ता (उद्धर्ता) भ-
L16.07	
A16.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21



Sarada to Devanagari transliteration

	वा ण वा त् ॥ ७ ६ ॥ ज य न्ति मो ह मा या दि म ल स क्षा ल न क्ष-
B16.07	वार्णवात्॥७६॥जयन्ति मोहमायादि मलसक्षालनक्ष-
L16.08	
A16.08	1 ॥ 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 ॥ 1819 ॥ माः ॥ शै व यो ग ब ला कृ ष्टा दि व्य पी यु ष वि प्रु षाः ॥ ७ ७ ॥
B16.08	- माः ॥ शैवयोगबलाकृष्टादिव्यपीयुषविप्रुषाः ॥७७॥

Date	2nd July 2020 (continued...)
	<ol style="list-style-type: none">1. In Line 16.02 there is a scribe error – orderly it should be 73, not 74.2. In Line 16.06 there should be स्वामिभिः & second last word is scribe's error that should be उद्धर्ता, not उदर्ता.3. [यस्याः प्राप्येत पर्यन्त वि..] Continuation of Verse 73 from Line 15.08 is shown within square brackets.4. Version – 3:
Notes	<ol style="list-style-type: none">a. [यस्याः प्राप्येत पर्यन्त वि..] शेषैः कैर्मनोरथैः॥ मायामेकनिमेषेण मुष्णंस्त्वां पातु नः शिवः॥७३॥b. वैराग्यस्य गतिं गुर्वी जानस्य परमां श्रियं। नैस्पृहस्य परां कोटिं बिभ्रतां त्वां प्रभुः प्रभोः॥७४॥c. ब्रह्मणोऽपि भवान् ब्रह्म कस्य नेशः त्वमीशितुः॥जगत्कल्याणकल्याणं कियत्त्वमिति वेत्ति कः॥७५॥



Sarada to Devanagari transliteration


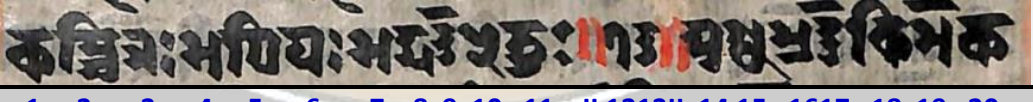

- d. किमन्यैर्बन्धुभिः किं च सुहृद्भिः स्वामिभिस्तथा ॥ सर्वस्थाने ममेश त्वं य उद्धर्ता
भवार्णवात् ॥७६॥
- e. जयन्ति मोहमायादि मलसक्षालनक्षमाः ॥ शैवयोगबलाकृष्टादिव्यपीयुषविप्रुषाः ॥७७॥

Page 17 Slokas L17.01 to L17.08





Sarada to Devanagari transliteration

Date	3 rd July 2020
L17.01	
A17.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 18 19 20 21 गा यत्र्यागी य ते य स्य धि यां ते जः प्र चो द कं ॥ चो द ये द पि-
B17.01	गायत्र्या गीयते यस्य धियां तेजः प्रचोदकं ॥ चोदयेदपि-
L17.02	
A17.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 ॥ 12 13 ॥ 14 15 16 17 18 19 20 क च्चि न्नः स धि यः स त्प ते प्र भुः ॥ ७ ८ ॥ अ ष्ट मूर् ते कि मे क-
B17.02	कच्चिन्नः सधियः सत्पते प्रभुः ॥ ७८ ॥ अष्टमूर्ते किमेक-
L17.03	
A17.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 ॥ 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 स्या म पि मूर् ते न नः स्थि तिं ॥ शा श्वं ती कु रु षे य द्वा तु ष्टः स-



Sarada to Devanagari transliteration

B17.03	स्यामपि मूर्त्तौ न नः स्थितिं ॥ शाश्वती (शाश्वतीं) कुरुषे यद्वा तुष्टः स-
L17.04	
A17.04	1 2 3 4 5 ॥ 6 7 ॥ 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 र्व क रि ष्य ति ॥ ७ ९ ॥ व स्तु त त्वं प दा र्था नां प्रा ये णा र्थ क्रि-
B17.04	र्व करिष्यति॥७९॥वस्तुतत्वं पदार्थानां प्रायेणार्थक्रि-

Date 3rd July 2020 (continued...)

L17.05	
A17.05	1 2 3 ॥ 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 ॥ या क रं ॥ भ व त स्त्वी श ना मा पि मो क्ष प र्यन्त सि द्धिं द ॥८०॥
B17.05	याकरं ॥ भवतस्त्वीशनामापिमोक्षपर्यन्तसिद्धिदं ॥८०॥
L17.06	
A17.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 18 मु हु र्मु हु र्ज ग च्चि त्र स्या न्य न्यां स्थि ति मू हि तुं ॥ श क्ति
B17.06	मुहुर्मुहुर्जगच्चित्रस्यान्यन्यां (अन्यान्यां) स्थितिमूहितुं ॥ शक्ति
L17.07	
A17.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 ॥ 15 16 ॥ 17 18 19 20 ॥ र्या ते त या ना थ को म न स्वी न वि स्मि तः ॥ ८१ ॥ दु ष्क रं सु-



Sarada to Devanagari transliteration

B17.07	र्या ते तया नाथ को मनस्वी न विस्मितः॥८१॥ दुष्करं सु-
L17.08	
A17.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 क री क र्तुं दुः खं सु ख यितुं त था ॥ ए क वी र स्मृ ति र्यः..
B17.08	करीकर्तुं दुःखं सुखयितुं तथा॥ एकवीरा स्मृतिर्यः..

Date	3 rd July 2020 (continued...)
Notes	<ol style="list-style-type: none">1. In Line 17.01 we can get little confused because that word looks like प्रशोदकम् it also can be correct, but in MS that word is प्रचोदकं। (श - usually we write with little big मात्रा)2. In Line 17.03 that should be शाश्वती - (either that may be scribe error or they write अनुस्वार before दीर्घ स्वर).3. In Line 17.05 that word is सिद्धिदं, not सिद्धिदं - because it does not make any sense.4. In Line 17.06 – there is scribe error that word should be अन्यान्यां (अन्या / अन्य + अन्याम्). after सन्धिकार्य we can have दीर्घादेशः and correct form will be अन्यान्यां.5. Hyphen after - दुष्करं सुकरीकर्तुं दुःखं सुखयितुं तथा॥ एकवीरा स्मृतिर्यः... in Line 17.08 indicates that the verse 82 is to be continued in Line 18.016. Version – 3:



Sarada to Devanagari transliteration

- गायत्र्या गीयते यस्य धियां तेजः प्रचोदकं ॥ चोदयेदपि कच्चिन्नः सधियः सत्पते प्रभुः॥७८॥
- अष्टमूर्ते किमेकस्यामपि मूर्ते न नः स्थितिं ॥ शाश्वतीं कुरुषे यद्वा तुष्टः सर्व करिष्यति॥७९॥
- वस्तुतत्त्वं पदार्थानां प्रायेणार्थक्रियाकरं॥ भवतस्त्वीश नामापि मोक्षपर्यन्तसिद्धिदं ॥८०॥
- मुहुर्मुहुर्गच्छित्रस्यान्यान्यां स्थितिमूहितुं ॥ शक्तिर्या ते तथा नाथ को मनस्वी न विस्मितः॥८१॥
- दुष्करं सुकरीकर्तुं दुःखं सुखयितुं तथा॥ एकवीरा स्मृतिर्य..

Date 4th & 5th July 2020

Guru Purnima Assignment



Sarada to Devanagari transliteration



Page 18 Slokas L18.01 to L18.08





Sarada to Devanagari transliteration



Date 6th July 2020

L18.01	भृङ्गभ्रमः भ्रमद्विषं ॥ ३३ ॥ स्यन्ति गीतयो यासां स
A18.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 ॥ 10 11 ॥ 12 13 14 15 16 17 18 19 20 स्य तं स्म रा मः स्म र द्वि षं ॥ ८ २ ॥ ज य न्ति गी त यो या सां स
B18.01	स्य तं स्मरामः स्मरद्विषं ॥ ८२ ॥ जयन्ति गीतयो यासां स
L18.02	गीयः परमेश्वरः ॥ यन्नाम्नापि महात्मानः कीर्यन्ते पुल-
A18.02	1 2 3 4 5 6 7 ॥ 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 गी यः प र मे श्व रः ॥ य न्ना म्ना पि म हा त्मा नः की र्य न्ते पु ल-
B18.02	गीयः (गेयः) परमेश्वरः ॥ यन्नाम्नापि महात्मानः कीर्यन्ते पुल-
L18.03	कङ्कुरैः ॥ ३३ ॥ रुक्मिण्यै रुक्मिण्यै रुक्मिण्यै रुक्मिण्यै रुक्मिण्यै रुक्मिण्यै



Sarada to Devanagari transliteration

A18.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 ॥ 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 ल्पः त्व मा त्मा य स्य सोप्य हं ॥ सं सा री ति कि मे श स्य स्व ष्णः
B18.07	ल्पः त्वमात्मा यस्य सोऽप्यहं ॥ संसारीति किमेशस्य स्वष्णः
L18.08	
A18.08	1 2 3 4 5 6 ॥ 7 8 ॥ 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 सो पि कु त स्त्व यि ॥ ८ ६ ॥ त द भ ङ्गि त द ग्रा म्यं त दे क मु...
B18.08	सोऽपि कुतस्त्वयि॥८६॥ तदभङ्गितदग्राम्यं तदेकमु...

Date 6th July 2020 (continued...)

	<ol style="list-style-type: none">1. In Line 18.02 There should be गेयः, not a गीयः 2. In Line 18.03 – there should be either भवेदिति or भवेद्यदि. (भवेदिदि does not give any meaning)3. In Line 18.07 विसर्ग is given outside the border.4. [दुष्करं सुकरीकर्तुं दुःखं सुखयितुं तथा॥ एकवीरा स्मृतिर्यं...] Continuation of Verse 82 from Line 17.08 is shown within square brackets.5. तदभङ्गितदग्राम्यं तदेकमु... Hyphen after - तदभङ्गितदग्राम्यं तदेकमु... in Line 18.08 indicates that the verse 87 is to be continued in Line 19.01
Notes	6. Version – 3:



Sarada to Devanagari transliteration

- a. [दुष्करं सुकरीकर्तुं दुःखं सुखयितुं तथा॥ एकवीरा स्मृतिर्य] -स्य तं स्मरामः स्मरद्विषं
॥ ८२ ॥
- b. जयन्ति गीतयो यासां स गेयः परमेश्वरः॥ यन्नाम्नापि महात्मानः कीर्यन्ते पुल-
काङ्करैः ॥ ८३ ॥
- c. भवानिव भवानेव भवेदिति /भवेद्यदि परं भव ॥ सुशक्तव्यूहसंव्युद्धैर्लोक्यारम्भसंहतिः
॥ ८४ ॥
- d. मन्त्रोसि मन्त्रणीयोऽस्य मन्त्री त्वतः कुतोऽपरः॥ समहयं देहि तन्मन्त्रं त्वन्मन्त्रः
स्यां यथा विभोः ॥ ८५ ॥
- e. भारूपाः सत्यसङ्कल्पः त्वमात्मा यस्य सोऽप्यहं॥ संसारीति किमेशस्य स्वप्नः सोऽपि
कुतस्त्वयि ॥ ८६ ॥
- f. तदभङ्गितदग्राम्यं तदेकमु..



Sarada to Devanagari transliteration



Date	7 th July 2020
------	---------------------------






Sarada to Devanagari transliteration

L19.01	
A19.01	1 2 3 4 5 ॥ 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 प प ति म त् ॥ त्व यि क र्म फ ल न्या स कृ ता मै श्व र्य मी श य
B19.01	पपत्तिमत्॥ त्व यि कर्मफलन्त्यास कृतामैश्वर्यमीश य
L19.02	
A19.02	1 ॥ 2 3 ॥ 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 ॥ 20 त्॥८७॥ क्ष मः कां ना प दं ह न्तुं कां दा तुं स म्प दं न वा॥ यो-
B19.02	त्॥८७॥ क्षमः कां नापदं हन्तुं कां दातुं सम्पदं न वा॥ यो-
L19.03	
A19.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 ॥ 16 17 ॥ 18 19 20 सौ स द यि तो स्मा कं दे व दे वो वृ ष ध्व जः ॥ ८ ८ ॥ मा या म-
B19.03	सौ स दयितोऽस्माकं देव देवो वृषध्वजः॥८८॥ मायाम-
L19.04	
A19.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 ॥ 14 15 16 17 18 19 20 य म ला न्ध स्य दि व्य स्य ज्ञा न च क्षु षः ॥ निर् म ली क र णे ना-
B19.04	य मलान्धस्य दिव्यस्य ज्ञानचक्षुषः॥ निर्मलीकरणे ना-

Date 7th July 2020 (continued...)



Sarada to Devanagari transliteration

L19.05	
A19.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 थ त्वद्भक्तिः परमाञ्जनं ॥ ८९ ॥ निर्भयं यद्यदानन्दमय
B19.05	थ त्वद्भक्तिः परमाञ्जनं ॥ ८९ ॥ निर्भयं यद्यदानन्दमय
L19.06	
A19.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 मेकं यदव्ययं ॥ पदं देह्ये हि मे शम्भो तूर्णं तत्किं प्रती-
B19.06	मेकं यदव्ययं ॥ पदं देह्ये हि मे शम्भो तूर्णं तत्किं प्रती-
L19.07	
A19.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 क्षते ॥ ९० ॥ अहो निसर्गगम्भीरो घोरः संसारसागरः ॥
B19.07	क्षते ॥ ९० ॥ अहो निसर्गगम्भीरो घोरः संसारसागरः ॥
L19.08	
A19.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 अहो तत्रणोपायः परः कोऽपि महेश्वरः ॥ ९१ ॥ नमः..
B19.08	अहो तत्रणोपायः परः कोऽपि महेश्वरः ॥ ९१ ॥ नमः

Date 7th July 2020 (continued...)



Sarada to Devanagari transliteration

1. In Line 19.02 – it seems अनुस्वार is there on नापं, but that is नापदं.
2. In Line 19.07 There should be घोरः, not घोरा because it is an adjective of संसारसागरः.
3. In Line 19.08 there should be परः, not परा because it an adjective of महेश्वरः.
4. [तदभङ्गितदग्राम्यं तदेकमु...] Continuation of Verse 87 from Line 18.08 is shown within square brackets.
5. Hyphen after - नमः... in Line 19.08 indicates that the verse 91 is to be continued in Line 20.01.

Notes

6. Version – 3:
 - a. [तदभङ्गितदग्राम्यं तदेकमु...] पपत्तिमत्॥ त्वयि कर्मफलन्यासकृतामैश्वर्यमीशयत्॥८७॥
 - b. क्षमः कां नापदं हन्तुं कां दातुं सम्पदं न वा॥ योऽसौ स दयितोऽस्माकं देव देवो वृषध्वजः॥८८॥
 - c. मायामय मलान्धस्य दिव्यस्य ज्ञानचक्षुषः॥ निर्मलीकरणे नाथ त्वद्भक्तिः परमाञ्जनं॥८९॥
 - d. निर्भयं यद्यदानन्दमयमेकं यदव्ययं॥ पदं देहयेहि मे शम्भो तूर्णं तत्किं प्रतीक्षते॥९०॥
 - e. अहो निसर्गगम्भीरो घोरः संसारसागरः॥अहो तत्तरणोपायः परः कोऽपि महेश्वरः॥९१॥
 - f. नमः ..



Sarada to Devanagari transliteration



Date	8 th July 2020
------	---------------------------



Sarada to Devanagari transliteration

L20.01	
A20.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 कृ त कृ तान्तान्ततु भ्यंम द न म र्दि ने ॥ म स्त क न्य स्त ग ङ्गा य य-
B20.01	कृतकृतान्तान्त तुभ्यं मदनमर्दिने ॥ मस्तकन्यस्तगङ्गाय य-
L20.02	
A20.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 था यु क्तार्थ का रि णे ॥ ९२ ॥ ऐ श्व र्य ज्ञा न वैरा ग्य ध र्मे षु प-
B20.02	थायुक्तार्थकारिणे॥९२॥ ऐश्वर्यज्ञानवैराग्यधर्मेषुप-
L20.03	
A20.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 रि स्थि तः ॥ ना थ प्रा र्थ य मा ना नां त्व दृ ते का प रा ग तिः ॥ ९३ ॥
B20.03	रिस्थितः॥ नाथ प्रार्थयमानानां त्वदृते का परा गतिः॥९३॥
L20.04	
A20.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 त्व य्य नि च्छ ति कः श म्भो श क्तः कु ब्ज यि तुं तृ णं ॥ त्व दि च्छा नु
B20.04	त्वय्यनिच्छति कः शम्भो शक्तः कुब्जयितुं तृणं ॥ त्वदिच्छानु

Date 8th July 2020 (continued...)



Sarada to Devanagari transliteration

L20.05	
A20.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 गृ ही तस्तु व हेद्ब्रा ह्मीं शु रं न कः ॥ ९४ ॥ हर प्र ण ति मा नि-
B20.05	गृहितस्तु वहेद्ब्राह्मीं शुरं न कः ॥९४॥हर प्रणतिमानि- (णि)
L20.06	
A20.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 क्य मु कुटोत्क टमस्त क ॥ न मे युः कं प रं कं वा न म ये यु र्न धी-
B20.06	क्यमुकुटोत्कटमस्तक ॥ नमेयुः कं परं कं वा नमयेयुर्न धी-
L20.07	
A20.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 ध नाः ॥ ९५ ॥ स र्व वि भ्र म नि र्मो क नि ष्क म्प म मृ त ह दं ॥
B20.07	धनाः ॥९५॥ सर्वविभ्रमनिर्मोकनिष्कम्पममृतहदं ॥
L20.08	
A20.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 भ वज्ज्ञाना म्बुधे र्म ध्य मध्या सी या पि धूर्ज टेः ॥ ९६ ॥ चि त्रं य-
B20.08	भवज्ज्ञानाम्बुधेर्मध्यमध्यासीयापि धूर्जटेः ॥९६॥ चित्रं य-

Date 8th July 2020 (continued...)



Sarada to Devanagari transliteration

1. In Line 20.05 there is error, that word should be **माणिक्य**.
2. In Line 20.06, there should be **मस्तकाः**, it can go with **धीधनाः**।.
3. [नमः] Continuation of Verse 92 from Line 19.08 is shown within square brackets.
4. Version – 3:

Notes

- a. [नमः]- कृतकृतान्तान्त तुभ्यं मदनमर्दिने ॥ मस्तकन्यस्तगङ्गाय यथायुक्तार्थकारिणे ॥९२॥
- b. ऐश्वर्यज्ञानवैराग्यधर्मोऽप्युपरिस्थितः ॥ नाथ प्रार्थयमानानां त्वदृते का परा गतिः ॥९३॥
- c. त्वय्यनिच्छति कः शम्भो शक्तः कुब्जयितुं तृणं ॥ त्वदिच्छानुगृहितस्तु वहेद्ब्राह्मीं शुरं न कः ॥९४॥
- d. हरप्रणतिमाणिक्यमुकुटोत्कटमस्तकाः ॥ नमेयुः कं परं कं वा नमयेयुर्न धीधनाः ॥९५॥
- e. सर्वविभ्रमनिर्मोकनिष्कम्पमृतहृदं ॥ भवज्ज्ञानाम्बुधर्मध्यमध्यासीयापि धूर्जटेः ॥९६॥
- f. चित्रं य-



Sarada to Devanagari transliteration



Date

9th July 2020



Sarada to Devanagari transliteration

L21.01	
A21.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 ॥ 14 15 16 17 18 19 20 शिचत्रदृष्टोऽपि मनोरथगतोऽपि वा ॥ परमार्थफलं ना-
B21.01	शिचत्रदृष्टोऽपि मनोरथगतोऽपि वा ॥ परमार्थफलं ना-
L21.02	
A21.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 ॥ 10 11 ॥ 12 13 14 15 16 17 18 19 20 थपरिपूर्णप्रयच्छसि ॥ ९७ ॥ को गुणैरधिकस्त्वतः त्व-
B21.02	थपरिपूर्णप्रयच्छसि ॥ ९७ ॥ को गुणैरधिकस्त्वतः त्व-
L21.03	
A21.03	1 2 3 4 5 6 7 ॥ 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 तः को निर्गुणो परः ॥ इति नाथ नमस्त्वां किं किं नन्दा मो
B21.03	तः को निर्गुणो परः ॥ इति नाथ नमस्त्वां किं (नुमः किं त्वां) किं नन्दामो (निन्दामो)
L21.04	
A21.04	1 2 3 4 ॥ 5 6 ॥ 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 नमन्महे ॥ ९८ ॥ कीर्तनेप्यमृतौघस्य यत्प्रसत्तेः फलं त-
B21.04	नमन्महे ॥ ९८ ॥ कीर्तनेप्यमृतौघस्य यत्प्रसत्तेः फलं त-

Date 9th July 2020 (continued...)



Sarada to Devanagari transliteration

L21.05	
A21.05	1 ॥ 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 ॥ 18 19 व ॥ तत्पा तु म पि को न्यो लं कि मु दा तुं ज ग त्प ते ॥ ९ ९
B21.05	व ॥ तत्पातुमपि कोऽन्योऽलं किमु दातुं जगत्पते ॥ ९९ ॥
L21.06	
A21.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 18 19 निः शेष प्रार्थ नी या र्थ सा र्थ सि द्धि प्र दा न तः ॥ त्व तः त्व-
B21.06	निःशेषप्रार्थनीयार्थसार्थसिद्धिप्रदानतः ॥ त्वत्तः त्व-
L21.07	
A21.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 ॥ 14 15 ॥ 16 17 18 19 20 21 दु क्ति मे वा प्तुं प्रा र्थ ये ना थ स र्व था ॥ १०० ॥ न म स्त्रै लो क्य ना-
B21.07	दुक्त्तिमेवाप्तुं प्रार्थये नाथ सर्वथा ॥ १०० ॥ नमस्त्रैलोक्यना-
L21.08	
A21.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 ॥ 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 था य तु भ्यं भ व भ व ज्जु षां ॥ त्रि लो की ना थ ता दा न नि र्वि-
B21.08	थाय तुभ्यं भव भवज्जुषां ॥ त्रिलोकीनाथतादाननिर्वि-

Date 9th July 2020 (continued...)



Sarada to Devanagari transliteration

1. In Line 21.03 most appropriate reading is - इति नाथ नुमः किं त्वां किं निन्दामो न मन्महे. because we cannot use नमः अव्यय with द्वितीया विभक्तिः, Again, नन्दामः is in alignment with नुमः। But, previous line shows the contrast as गुणैरधिकः अथवा निर्गुणैरधिकः। So, निन्दामो is appropriate (नुमः अथवा निन्दामः) - because न मन्महे confirms the dilemma or confusion.
2. [चित्रं य...] Continuation of Verse 97 from Line 20.08 is shown within square brackets.
3. Hyphen after – नमस्त्रैलोक्यनाथाय तुभ्यं भव भवज्जुषां॥त्रिलोकीनाथतादाननिर्वि - in last line indicates that the verse 101 is to be continued in Line 22.01.

Notes

4. Version – 3:
 - a. [चित्रं य-]श्चित्रदृष्टोऽपि मनोरथगतोऽपि वा॥ परमार्थफलं नाथ परिपूर्णं प्रयच्छसि ॥९७॥
 - b. को गुणैरधिकस्त्वतः त्वतः को निर्गुणो परः॥ इति नाथ नुमः किं त्वां किं निन्दामो न मन्महे ॥९८॥
 - c. कीर्तनेप्यमृतौघस्य यत्प्रसतेःफलं तव॥ तत्पातुमपि कोऽन्योऽलं किमु दातुं जगत्पते॥९९॥
 - d. निःशेषप्रार्थनीयार्थसार्थसिद्धिप्रदानतः॥ त्वतः त्वद्भक्तिमेवाप्तुं प्रार्थये नाथ सर्वथा॥१००॥
 - e. नमस्त्रैलोक्यनाथाय तुभ्यं भव भवज्जुषां ॥ त्रिलोकीनाथतादाननिर्वि-



Sarada to Devanagari transliteration

L22.01	
A22.01	1 2 3 4 5 6 ॥ 7 ॥ 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 ना य क श क्त ये ॥ १ ॥ नि शेष क्लेश हा न स्य हे तु क इ ति
B22.01	नायक शक्तये॥१॥ निशेषक्लेशहानस्य हेतुक इति
L22.02	
A22.02	1 2 3 ॥ 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 श क्त ये ॥स्वा मि न्सो सी ति नि श्चि त्य क स्त्वां न श र णं ग ता॥२॥
B22.02	शक्तये॥ स्वामिन्सोऽसीति निश्चित्य कस्त्वां न शरणं गता गतः॥२॥
L22.03	
A22.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 18 19 20 भु क्त्वा न्भो गा न्भ व भ्रा न्तिं हि त्वा लि प्से प रं प दं ॥ इ त्या शं से-
B22.03	भुक्त्वान् (भुक्त्वा) भोगान्भवभ्रान्तिं हित्वा लिप्से परंपदं ॥ इत्याशंसे-
L22.04	
A22.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 ॥ 13 ॥ 14 15 16 17 18 19 20 ह शो भे न श म्भौ भ क्ति म तः प रं ॥ ३ ॥ ना थं स्व प्ने पि य त्कु-
B22.04	ह शोभेन शम्भौ भक्तिमतः परं॥३॥ नाथं स्वप्नेऽपि यत्कु-

Date 10th July 2020 (continued...)



Sarada to Devanagari transliteration

L22.05	
A22.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 ॥ 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 ॥ र्यां ब्रूयां वा साध्वसाधु वा ॥ त्वदधीनत्वदर्पेण सर्वत्रा-
B22.05	र्यां ब्रूयां वा साध्वसाधु वा ॥ त्वदधीनत्वदर्पेण सर्वत्रा-
L22.06	
A22.06	1 2 3 4 5 ॥ 6 ॥ 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 त्रास्मिनिर्वृतः ॥ ५ ॥ ज्योतिषामपि यज्ज्योतिस्तत्र त्वद्धा-
B22.06	त्रास्मिनिर्वृतः ॥ ५ ॥ ज्योतिषामपि यज्ज्योतिस्तत्र त्वद्धा -
L22.07	
A22.07	1 2 3 4 ॥ 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 मिधावतः ॥ चित्तस्येश तमःस्पर्शो मन्येवन्ध्यात्मजानुजः
B22.07	मिधावतः ॥ चित्तस्येश तमःस्पर्शो मन्ये वन्ध्यात्मजानुजः
L22.08	
A22.08	1 ॥ 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 ॥ 19 20 21 22 ५ ॥ मन्येन्यस्तपदसोऽपि क्षेमे मोक्षस्य वर्त्मनि ॥ मनोरथः
B22.08	५ ॥ मन्येन्यस्तपदसोऽपि क्षेमे मोक्षस्य वर्त्मनि ॥ मनोरथः

Date

10th July 2020 (continued...)



Sarada to Devanagari transliteration

	<ol style="list-style-type: none">1. In Line 22.01 there must be विसर्ग between निःशेष.2. In Line 22.02 last - गतः will be correct reading, not गता, because it is going with कः, so both should be in same case.3. In Line 22.03 – either there may be भुक्तान् or भुक्त्वा, भुक्त्वान् भोगान् will be wrong because भुक्त्वा is an indeclinable.
Notes	<ol style="list-style-type: none">4. [नमस्त्रैलोक्यनाथाय तुभ्यं भव भवज्जुषां॥ त्रिलोकीनाथतादाननिर्वि -] Continuation of Verse 101 from Line 21.08 is shown within square brackets.5. Hyphen after - मन्ये न्यस्तपद सोऽपि क्षेमे मोक्षस्य वर्त्मनि ॥ मनोरथः... in Line 22.08 indicates that the verse 106 is to be continued in Line 23.016. Version – 3:<ol style="list-style-type: none">a. [नमस्त्रैलोक्यनाथाय तुभ्यं भव भवज्जुषां॥ त्रिलोकीनाथतादाननिर्वि]- नायक शक्तये॥१॥b. निःशेषक्लेशहानस्य हेतुक इति शक्तये॥ स्वामिन्सोऽसीति निश्चित्य कस्त्वां न शरणं गतः॥२॥c. भुक्त्वान् (भुक्त्वा) भोगान्भवभ्रान्तिं हित्वा लिप्से परं पदं ॥ इत्याशंसेह शोभेन शम्भौ भक्तिमतः परं॥३॥d. नाथं स्वप्नेऽपि यत्कुर्या ब्रूयां वा साध्वसाधु वा॥ त्वदधीनत्वदर्पेण सर्वत्रात्रास्मि निर्वृतः॥४॥e. ज्योतिषामपि यज्ज्योतिस्तत्र त्वद्धाम्नि धावतः॥ चित्तस्येश तमःस्पर्शां मन्ये वन्ध्यात्मजानुजः॥ ५॥f. मन्ये न्यस्तपद सोऽपि क्षेमे मोक्षस्य वर्त्मनि ॥ मनोरथः..



Sarada to Devanagari transliteration

Date 11th July 2020

L23.01	
A23.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 स्थितो यस्य से विष्ये शिवमित्ययं ॥७॥ स्थित्युत्पतिलयै-
B23.01	स्थितो यस्य सेविष्ये शिवमित्ययं ॥७॥ स्थित्युत्पतिलयै-
L23.02	
A23.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 लोकत्रयस्योपक्रियास्विह ॥ एकैवेश भवच्छक्तिः स्वत-
B23.02	लोकत्रयस्योपक्रियास्विह ॥ एकैवेश भवच्छक्तिः स्वत-
L23.03	
A23.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 त्रं तन्त्रमीक्षते ॥८॥ त्रिलोक्यामिह कस्त्राता त्रिताप्या नोप-
B23.03	त्रं तन्त्रमीक्षते ॥८॥ त्रिलोक्यामिह कस्त्राता त्रिताप्या नोप-
L23.04	
A23.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 तापितः ॥ तस्मै नमोस्त्वन्ते यस्त्वं तन्निर्वाणामृतहृदः ॥९॥
B23.04	तापितः ॥ तस्मै नमोस्त्वन्ते यस्त्वं तन्निर्वाणामृतहृदः ॥९॥



Sarada to Devanagari transliteration

Date 11th July 2020 (continued...)

L23.05	
A23.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 18 19 20 कृ त्रि मा पि भ व द्भ क्ति र कृ त्रि म फ लो द या ॥ नि श्छ द्मा चे-
B23.05	कृत्रिमापि भवद्भक्तिरकृत्रिमफलोदया ॥ निश्छद्मा चे-
L23.06	
A23.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 ॥ 13 ॥ 14 15 16 17 18 19 20 द्भ वे त्सै षा किं फ ले ति त्व यो च्य तां ॥ १० ॥ त्व च्च क्षु री क्ष्य से ये-
B23.06	द्भवेत्सैषा किं फलेति त्वयोच्यतां ॥ १० ॥ त्वच्चक्षुरीक्ष्यसे ये-
L23.07	
A23.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 ॥ 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 न सा ग ति र्ग म्य से व या ॥ फ लं त द ज जा तं य त त्क था क-
B23.07	न सा गतिर्गम्यसे वया [य या] ॥ फलं तदज जातं यतत्कथाक-
L23.08	
A23.08	1 2 3 4 5 ॥ 6 ॥ 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 । ल् प पा द पा त् ॥ ११ ॥ श्रे य सां श्रे य ए वै ते दु प रि त्व य या
B23.08	ल्पपादपात् ॥ ११ ॥ श्रेयसां श्रेय एवैतेदुपरित्वय [यि] या



Sarada to Devanagari transliteration

Date 11th July 2020 (continued...)

	<ol style="list-style-type: none">1. In Line 23.02 रकार is missing, because previous word is ending with तृतीया विभक्ती बहुवचनम् - so it should be स्थित्युत्पत्तिलयैर्लोक.....।2. In Line 23.04 there can be another reading as नमोऽस्तु ते।3. In Line 23.07 – it seems like वया, but grammatically that will be wrong, that word is यया.4. In Line 23.08 – it has been written as त्वया, but correct word is त्वयिया5. In Line 23.08 एवैतेदुपरि will be wrong, grammatically that should be एवैतद्6. Version – 3:
Notes	<ol style="list-style-type: none">a. स्थितो यस्य सेविष्ये शिवमित्ययं ॥७॥b. स्थित्युत्पत्तिलयैर्लोकत्रयस्योपक्रियास्विह॥ एकैवेश भवच्छक्तिः स्वतन्त्रं तन्त्रमीक्षते॥८॥c. त्रिलोक्यामिह कस्त्राता त्रिताप्या नोपतापितः ॥ तस्मै नमोस्वन्ते यस्त्वं तन्निर्वाणामृतहृदः ॥९॥d. कृत्रिमापि भवद्भक्तिरकृत्रिमफलोदया॥ निश्छद्मा चेद्भवेत्सैषा किं फलेति त्वयोच्यतां॥१०॥e. त्वचक्षुरीक्ष्यसे येन सा गतिर्गम्यसे वया [यया] ॥ फलं तदज जातं यत्तत्कथाकल्पपादपात्॥११॥f. श्रेयसां श्रेय एवैतेदुपरि त्व यया [यि या]



Sarada to Devanagari transliteration

Page 24 Slokas L24.01 to L24.08

भिः॥ उरुयहयैश्वरीममंभ॥ ०० ॥ सुदे
 भुतमः मवमेवमेभभुणमः॥ कुरुकलकल
 भुनयेभववयो॥ ०१ ॥ भुनयुगुगिभुः इले
 ककलनदिन॥ सुनमीयनमेवकेकभुभुभु
 भिः॥ ०३ ॥ निःमेधमपियदृककीनमेधकति
 धुमि॥ पदेमिडेउममभुकिंनभभुयिधुमि॥ ०८
 पशुभिरुडरुहेभिमदनभ्रीरिधुवन॥ उवेदल
 भुनभुयभुमलभुनः॥ ०९ ॥ सुरुसुभुभच।

मु.
मि.
०१





Sarada to Devanagari transliteration

Date 12th July 2020

L24.01	
A24.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 स्थितः ॥ तदन्तरायहतये त्वमीश शरणं मम ॥ ११ ॥ अहो
B24.01	स्थितः ॥ तदन्तरायहतये त्वमीश शरणं मम ॥ ११ ॥ अहो
L24.02	
A24.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 साध्वतमः शर्वसेवाशंसासुधारसः ॥ कुत्र कालकला-
B24.02	साध्वतमः शर्वसेवाशंसासुधारसः ॥ कुत्र कालकला-
L24.03	
A24.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 मात्रे न यो नवनवायते ॥ १२ ॥ मुहुर्मुहुरविश्रान्तः त्रैलो
B24.03	मात्रे न यो नवनवायते ॥ १२ ॥ मुहुर्मुहुरविश्रान्तः त्रैलो
L24.04	
A24.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 क्यं कल्पनाहिना ॥ ज्ञानदीपेन देवत्वांकदानुस्यामुप
B24.04	क्यं कल्पनाहिना ॥ ज्ञानदीपेन देवत्वांकदानुस्यामुप-



Sarada to Devanagari transliteration

Date 12th July 2020 (continued...)

L24.05	
A24.05	1 2 ॥ 3 4 ॥ 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 स्थितः ॥ १३ ॥ निः शेष म पि य द्वेक क्षी ण दो षे क रि-
B24.05	स्थितः ॥ १३ ॥ निःशेषमपि यद्वेकक्षीणदोषे करि-
L24.06	
A24.06	1 2 ॥ 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 ॥ 19 20 प्यसि ॥ प दं चि ते त दा श म्भो किं न स म्पा द यि ष्य सि ॥ १४ ॥
B24.06	प्यसि ॥ पदं चिते तदा शम्भो किं न सम्पादयिष्यसि ॥ १४ ॥
L24.07	
A24.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 18 19 20 ध न्योऽस्मि कृत कृत्योऽस्मि म हा न स्मी ति भा व ना ॥ भ वे त्सा ल -
B24.07	धन्योऽस्मि कृतकृत्योऽस्मि महानस्मीति [महान्नस्मीति] भावना ॥ भवेत्साल--
L24.08	
A24.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 ॥ 13 14 ॥ 15 16 17 18 19 20 21 ॥ म्भना तस्य यस्त्वदा ल म्ब नः प्र भो ॥ १५ ॥ शु भा शु भ स्य सर्व ।
B24.08	म्भना तस्य यस्त्वदालम्बनः प्रभो ॥ १५ ॥ शुभाशुभस्य सर्व



Sarada to Devanagari transliteration

Date 12th July 2020 (continued...)

	<p>1. [श्रेयसां श्रेय एवैतदुपरि त्वयि या -] Continuation of Verse 111 from Line 23.08 is shown within square brackets.</p> <p>2. Hyphen after - शुभाशुभस्य सर्व...in last line indicates that the verse 116 is to be continued in Line 25.01</p> <p>3. In Line 24.07 – it should be महान्नस्मीति and not महानस्मीति</p> <p>4. Version – 3:</p> <p>a. [श्रेयसां श्रेय एवैतदुपरि त्वयि या] -स्थितः॥ तदन्तरायहतये त्वमीश शरणं मम ॥ ११॥</p> <p>b. अहो साध्वतमः शर्वसेवाशंसासुधारसः॥ कुत्र कालकलामात्रे न यो नवनवायते॥१२॥</p> <p>c. मुहुर्मुहुरविश्रान्तः त्रैलोक्यं कल्पनाहिना॥जानदीपेन देव त्वां कदा नु स्यामुपस्थितः ॥१३॥</p> <p>d. निःशेषमपि यद्येकक्षीणदोषे करिष्यसि॥ पदं चित्ते तदा शम्भो किं न सम्पादयिष्यति ॥१४॥</p> <p>e. धन्योऽस्मि कृतकृत्योऽस्मि महान्नस्मीति भावना॥ भवेत्सालम्भना तस्य यस्त्वदालम्बनः प्रभो ॥१५॥</p> <p>f. शुभाशुभस्य सर्व..</p>
Notes	



Sarada to Devanagari transliteration

Date 13th July 2020

L25.01	
A25.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 ॥ 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 स्य स्वयं कर्ता भवानपि ॥ भवद्भक्तिस्तु जननी शुभस्यैवे-
B25.01	स्य स्वयं कर्ता भवानपि ॥ भवद्भक्तिस्तु जननी शुभस्यैवे-
L25.02	
A25.02	1 2 3 4 ॥ 5 6 ॥ 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 शकेवलं ॥ १६ ॥ प्रसन्नेमनसिस्वामिन् किंत्वंनिर्विशसे
B25.02	शकेवलं ॥ १६ ॥ प्रसन्नेमनसिस्वामिन् किंत्वंनिर्विशसे
L25.03	
A25.03	1 2 ॥ 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 ॥ 19 20 ॥ किमु ॥ त्वत्प्रवेशात्प्रसेदेत्तदितिदोलायतेमतिः ॥ १७ ॥
B25.03	किमु ॥ त्वत्प्रवेशात्प्रसेदेत्तदितिदोलायतेमतिः ॥ १७ ॥
L25.04	
A25.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ॥ 17 18 19 20 21 निश्चयःपुनरेषोऽत्रत्वदधिष्ठानमेवहि ॥ प्रसादोमन-
B25.04	निश्चयःपुनरेषोऽत्रत्वदधिष्ठानमेवहि ॥ प्रसादोमन-



Sarada to Devanagari transliteration

Date 13th July 2020 (continued...)

L25.05	भः भुभिः भिः भिः भिः भिः भिः ॥ ७ ॥ वः मः योः सुः कः
A25.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 सः स्वा मि न्स सि द्धि त त्प रं प दं ॥ १ ८ ॥ व चः चे त श्च का-
B25.05	सः स्वामिन् ससिद्धि तत्परं पदं ॥ १८ ॥ वचः चेतश्च का-
L25.06	दं म म गी रं य म भ रं ॥ इ इ भ रं न म्भु य र व र्भु रं
A25.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 र्यं च श री रं य न्म म प्र भोः ॥ त्व त्प्र सा दे न त द्भू या द व द्भा वै-
B25.06	र्यं च शरीरं यन्मम प्रभोः ॥ त्वत्प्रसादेन तद्भूयादवद्भावै-
L25.07	क भू ष णं ॥ १९ ॥ भू र म नो र थ फ ल प्र दं
A25.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 क भू ष णं ॥ १९ ॥ स्त व चिन्ता म णिं भू रि मनो र थ फ ल प्र दं।
B25.07	कभूषणं ॥ १९ ॥ स्तवचिन्तामणिं भूरिमनोरथफलप्रदं।
L25.08	भ क्ति ल क्ष्म्या ल यं श म्भो ब ट्ट ना रा य णो भ्य धा त् ॥ २० ॥ श-
A25.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 भ क्ति ल क्ष्म्या ल यं श म्भो ब ट्ट ना रा य णो भ्य धा त् ॥ २० ॥ श-
B25.08	भक्तिलक्ष्म्यालयं शम्भो बट्टनारायणो भ्यधात् ॥ २० ॥ श-



Sarada to Devanagari transliteration

Date 13th July 2020 (continued...)




Notes

1. In Line 25.03 there should be प्रसीदेत्. Because we do not have प्रसेदेत् word. So प्रसीदेत् will be correct reading. It is there in क्षेमेन्द्र's commentary also
2. In Line 25.05 – there could be either सा सिद्धिस्तत्परं or ससिद्धिस्तत्परं, it will be wrong as ससिद्धितत्परं।
3. In Line 25.08 there should be भट्टनारायणो, not as बट्टनारायण।.
4. [शुभाशुभस्य सर्व...] Continuation of Verse 116 from Line 24.08 is shown within square brackets.
5. Hyphen after - श...in last line indicates that the verse 121 is to be continued in Line 26.01.
6. Version – 3:
 - a. [शुभाशुभस्य सर्व..]स्य स्वयं कर्ता भवानपि॥ भवद्भक्तिस्तु जननी शुभस्यैवेश केवलं ॥१६॥
 - b. प्रसन्ने मनसि स्वामिन् किं त्वं निर्विशसे किमु॥ त्वत्प्रवेशात्प्रसीदेत्तदिति दोलायते मतिः॥१७॥
 - c. निश्चयः पुनरेषोऽत्र त्वदधिष्ठानमेव हि॥ प्रसादो मनसः स्वामिन् ससिद्धिस्तत्परं पदं ॥१८॥
 - d. वचः चेतश्च कार्यं च शरीरं यन्मम प्रभोः॥ त्वत्प्रसादेन तद्भूयाद्भवद्भावैकभूषणं॥१९॥
 - e. स्तवचिन्तामणिं भूरिमनोरथफलप्रदं भक्तिलक्ष्म्यालयं शम्भोर्भट्टनारायणो भ्यधात्॥२०॥ श



Sarada to Devanagari transliteration

Date 13th July 2020 (continued...)

L26.01	
A26.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 म्भोः प्र का श व पु शा श क्ति रे कः ज य त्य सौ ॥ यः स्फु र
B26.01	म्भोः प्रकाशवपुशा शक्तिरेकः [शक्तिरेका] जयत्यसौ ॥ या स्फुर
L26.02	
A26.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 त्येवतनुते प रा मृ त म यं ज ग त् ॥ ॥ इ ति श्री स्त व चिन्ता-
B26.02	त्येवतनुते परामृतमयं जगत् ॥ इति श्री स्तवचिन्ता-
L26.03	
A26.03	1 2 3 4 5 6 ॥ ॥ ॥ म न स म्पू र्ण म् ॥ ॥ ॥
B26.03	मनसम्पूर्णम् ॥



Sarada to Devanagari transliteration

Date 13th July 2020 (continued...)

	<p>1. In Line 26.01 प्रकाशवपुषः will be appropriate reading.</p> <p>2. And rather than यः, या is perfect reading because in previous quarter there is शक्तिः word, so या should be there.</p>
Notes	<p>3. [श...] Continuation of Verse from Line 25.08 is shown within square brackets.</p> <p>4. Version – 3:</p> <p>a. [श] - म्भोः प्रकाशवपुषः शक्तिरेका जयत्यसौ॥ या स्फुर</p> <p>b. त्येवतनुते परामृतमयं जगत्॥ इति श्री स्तवचिन्तामनसम्पूर्णम्॥</p>